SCANNED ओ३म् DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 07 अक्टूबर 2018

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 07 अक्टूबर 2018 से 13 अक्टूबर 2018

आश्विन कृ. – 13 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 40, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. रणधीर सिंह नगर लुधियाना में वेद प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बी.आर. एस. नगर, लुधियाना में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के तत्त्वावधान में 'वेद प्रचार सप्ताह' मनाया गया।

'वेद प्रचार सप्ताह' का आरंभ वेदों की ऋचाओं के गान से हुआ जिसमें वैदिक मंत्रों से दैनिक यज्ञ किया गया। आर्य समाज के दस नियमों को जीवन में अपनाने के लिए विभिन्न क्रियाकलाप करवाए गए। 'वेद प्रचार सप्ताह' के अंतर्गत अनेक गतिविधियाँ करवाई गई

भारतीय परम्परा का निर्वहन करते हुए स्कूल के छात्रों को वेदों के महत्त्व से परिचित करवाने हेतु सामवेद की ऋचाओं के साथ दैनिक यज्ञ किया गया। प्रथम दिन दैनिक यज्ञ में स्कूल प्राचार्या मुख्य यजमान रहीं। तत्पश्चात् आर्य समाज के पहले नियम से संबंधित लघुनाटिका 'आदिमूल परमेश्वर' पेश की गई। दूसरे नियम में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का गूढ़ अर्थ उपस्थित छात्रों के समक्ष सरल विधि से पेश किया गया ताकि उन्हें ईश्वर के अमूर्त रूप का परिचय मिल सके। प्राचार्या ने छात्रों को ईश्वर द्वारा संचालित विश्व के बारे में एक लघु कहानी सुनाई और उन्हें वैदिक ज्ञान से जुड़ने का संदेश भी दिया।

द्वितीय दिवस पर दैनिक यज्ञ के उपरांत आर्य समाज के तीसरे नियम पर विशेष चर्चा की गई, जिसके अंतर्गत 'टॉक शो' में सामाजिक बुराइयों व अंधविश्वासों के उन्मूलन पर विचार दिए गए। ओ३म् ध्वनि पर नृत्य प्रस्तुति ने सब को भावविभोर कर दिया। चौथे नियम पर छात्रों के साथ अध्यापकों ने 'सत्यम् शिवम सुंदरम्' गीत गाया और 'यज्ञ का महत्त्व' वक्तव्य द्वारा सबको वेदों में निहित शाश्वत मूल्यों से जोड़ा।

पाँचवें नियम के तहत उपस्थित विद्यार्थी वर्ग को कविता गायन, संवाद व लघुनाटिका 'धर्म और कर्म' द्वारा धर्मानुसार कर्म करने हेतु प्रेरित किया गया। छठे नियम के अंतर्गत सामाजिक, आध्यात्मिक व शारीरिक उत्थान हेतु ईश्वरीय प्रार्थना गीत के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रेरक जीवन पर आधारित नाटिका दिखाई गई।

अगले दिन जहाँ छात्रों ने सातवें नियम की सरल–सुबोध रूप में व्याख्या प्रस्तुत की कोरियोग्राफी – शिक्षा का महत्त्व ने छात्रों को आठवें नियम से अवगत करवाया व सामाजिक कुप्रथाओं के विषय पर आधारित वार्ता ने सभी को आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलनों से जुड़ने की प्रेरणा दी।

नौवें नियम को स्पष्ट करते हुए एक नाटक के माध्यम से 'वसुधैवकुटुम्बकम्' के भाव को दर्शाया गया। समय का महत्त्व विषय पर कविता पाठ किया गया। अंतिम प्रस्तुति नृत्य नाटिका ने सभी को आध्यात्मिक आनंद से भर दिया।

कार्यक्रम के आखिरी पड़ाव में स्कूल प्राचार्या की अध्यक्षता में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य नौजवान पीढ़ी को वैदिक विचारधारा एवम् समसामयिक मुद्दों से जोड़ना रहा।

विभिन्न दिनों में दैनिक यज्ञ में उपस्थित यजमानों ने छात्रों को आर्यसमाज की वैदिक, तार्किक व वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात कर अपना सर्वांगीण विकास करने का आशीर्वाद दिया।

अंत में स्कूल प्राचार्या ने 'वेद प्रचार सप्ताह' के यज्ञ में पूर्णाहुति देकर कहा कि शैक्षणिक संस्थाओं में 'वेद प्रचार सप्ताह' जैसे समारोहों का मनाया जाना समाज को 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' बनाने की दिशा में उठाया गया एक सशक्त कदम है।

आनन्द आरोग्य मन्दिर (आर्य समाज, अनारकली) द्वारा निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर

आर्य समाज (अनारकली) परिसर में शुरू किए गए आनन्द आरोग्य मन्दिर का शुभारंभ समाज के निम्न एवं कमज़ोर लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ मुहैया कराने के उद्देश्य से हुआ। अब तक इसके तत्त्वावधान में चार शिविर संचालित किए जा चुके हैं।

पाँचवाँ निःशुल्क मधुमेह (डायबिटिज) जाँच शिविर का आयोजन आर्य समाज (अनारकली) के प्रांगण में रविवार दिनाँक 16 सितम्बर, 2018 को आयोजित किया गया।

शिविर में सभी वर्ग के एवं सभी आयु वर्ग के पुरुष, महिलायें व बच्चों के आने से कैम्प शिविर बहुत सफल रहा। एक चिकित्सीय जाँच प्रपत्र तैयार किया गया जिसके द्वारा शरीर के सभी अंगों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही मधुमेह की रोकथाम से सम्बन्धित जानकारी भी नत्थी की गई।

आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग के इलाकों एवं काली बाड़ी क्षेत्र के निवासियों ने इस शिविर में अपनी चिकित्सीय जाँच के साथ–साथ निःशुल्क रक्त चाप एवं मधुमेह की जाँच करवाई। सभी मरीजों को सात दिन की मुक्त दवाईयाँ दी गईं। नेत्र जाँच, दंत निरीक्षण, सामान्य निरीक्षण, न्यूरोपैथी, मनोचिकित्सा थैरेपी से संबंधित जाँच भी की गई। शरीर की सम्पूर्ण जाँच कर उनको स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर उपचार के तरीकों से अवगत करवाया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 07 अक्टूबर 2018 से 13 अक्टूबर 2018

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्।**

● (**अग्ने**) हे यज्ञाग्नि! (**एताः**) ये (**ते**) तेरे लिए (**समिधः**) समिधाएँ [हैं], [इनसे] (**त्वं**) तू (**इत्**) निश्चय ही (**सम् इद्धः**) संदीप्त (**भव**) हो। (**अस्मासु**) हम [इनसे] (**त्वं**) तू (**इत्**) निश्चय ही (**सम् इद्धः**) संदीप्त (**भव**) हो। (**अस्मासु**) हम [ब्रह्मचारियों] में (**आयुः**) जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए (**अमृतत्वम्**) अमरत्व (**धेहि**) प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक–एक कर अग्नि में आहुति दूँगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य–रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध–अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल–वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु–शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि–समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने **''घूँघट के पट खोल रे, तोहे पिया मिलेंगे''** पर कथा सुनाते हुए कहा मनुष्य का यह मन एक कमरा है। इसके अन्दर परमात्मा की ध्वनि लगातार बोलती है। किन्तु बाहर की इच्छाओं और वासनाओं ने इस ध्वनि को ही दबा दिया है। अन्दर के पट तब खुलें, जब बाहर के पट बन्द हों। बाहर के पट बन्द करने से ही घूँघट के पट खुलते हैं, तब प्रियतम प्रभु का दर्शन होता है। **''जोंक और मनुष्य में समानता''** पर कथा सुनाते हुए कहा दूध–जैसी अमृत वस्तु के पास पहुँचकर अभागी जोंकों को दूध पीने की नहीं सूझती। उसी प्रकार मनुष्य अभागा है जिसे जोंक की भाँति केवल मैला रुधिर मिलता है। **''तीन प्रकार के मनुष्य''** पर कथा सुनाते हुए कहा संसार में आजकल तीन प्रकार के मनुष्य हैं, अब के, तबके और अबके न तबके।

आगे पढ़ेंगे दो लघु कथाएँ

मोह–ममता की रस्सी खोलो!

काशी में कुछ पण्डित थे। जब एक पर्व समीप आया तो उन्होंने सोचा–चलो, यह पर्व प्रयागराज में चलकर मनायें। वे बैठ गये एक बहुत बड़ी और अच्छी–सी नाव में। सायंकाल का समय था। रात्रि होने वाली थी। उसका अँधेरा बढ़ता जाता था। सबने सोचा–'रात–भर नौका चलायेंगे। प्रातः प्रयागराज में पहुँचकर स्नान करेंगे, पर्व मनायेंगे।' काशी के कुछ लोगों को भाँग बहुत प्यारी होती है। इसलिए नौका में भाँग का भी प्रबन्ध था। सब लोगों ने भाँग पी और गीत गाने लगे। कुछ लोग चप्पू चलाने लगे। खूब मस्ती के साथ वे गीत गा रहे थे। खूब जोश के साथ चप्पू चला रहे थे। पहले लोग थक जाते तो दूसरे लोग चप्पू चलाने लगते। बीच–बीच में भाँग पी पीते। मिठाई भी खाते। लगातार चप्पू भी चलाते। रात्रि हो गई। तारे निकल आए। वे चप्पू चलाते रहे। खूब मज़े से गीत भी गाते रहे। प्रातःकाल का प्रकाश हुआ तो एक व्यक्ति ने कहा–"अब तो दिन निकलने वाला है। प्रयागराज आ गया होगा। तनिक उठकर देखो तो सही कि कहाँ तक पहुँचे हैं।"

तब एक व्यक्ति उठा। सामने वाले किनारे को देखकर बोला–"मुझे तो यह काशी जी का घाट प्रतीत होता है।"

दूसरे बहुत ज़ोर से हँस उठे; बोले–"प्रतीत होता है भाँग अधिक पी गया है। इसे प्रयाग में भी काशी दिखाई देती है।"

एक पुरोहित जी थे। उनसे कहा गया – "आप उठकर देखो, पुरोहित जी! यह व्यक्ति तो भाँग के नशे में है।"

पुरोहित जी आँखे मलते हुए उठे। आँखें फाड़कर उन्होंने सामने देखा। धीमी–सी आवाज़ में बोले– "शायद मैं नशे में हूँ। मुझे तो यह काशी का घाट प्रतीत होता है।"

सब लोग फिर हँस उठे– "यह भी नशे में है। रातभर हम चलते रहे और इसे अभी तक काशी दिखाई देती है। तुम उठो भाई! तुम देखो तनिक ध्यान से।"

तब तीसरा व्यक्ति उठा। उसने अधिक ध्यान से देखा और चिल्ला उठा– "अरे! आश्चर्य है, यह तो सचमुच काशी जी का घाट है!"

फिर एक–एक करके सबने देखा कि नाव उसी घाट पर खड़ी है, जहाँ पर वे सायंकाल नाव में बैठे थे। परन्तु यह हुआ कैसे? रात–भर वे चप्पू चलाते रहे, फिर नाव जहाँ–की–तहाँ खड़ी रही तो किस प्रकार?

तब किसी ने देखा और कहा–"अरे! देखो, आश्चर्य तो यहाँ हुआ पड़ा है। जिस कील के साथ नाव की रस्सी बँधी थी उसके साथ तो अब भी बँधी है। भाँग के नशे में हम उस रस्सी को खोलना ही भूल गये।"

अरे ओ चप्पू चलानेवालो! इस रस्सी को तो खोलो! मोह और ममता की, राग और लगाव की यह जो रस्सी तुमने अपनी नाव को बाँध रखी है, उसे खोले बिना, उससे छुटकारा पाये बिना, तुम्हारे चप्पू चलाने से भी यह नौका पहुँचेगी नहीं।

मोह–ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहाँ अपना रे!

एक था नौजवान! देखने में सुन्दर, स्वस्थ, वैसे बहुत अच्छा, परन्तु कुसंगत में पड़कर बिगड़ गया। एक दिन ऋतु बहुत अच्छी थी। भीनी–भीनी वायु चल रही थी। वह अपने मकान की छत पर खड़ा होकर पतंग उड़ा रहा था कि डोर टूट गई। पतंग शहर से परे जंगल के अन्दर एक साधु की कुटिया के पास जा गिरी। महात्मा ने पतंग उठाई, अपनी कुटिया में ले–जाकर रख दी।

तभी पतंग को ढूँढ़ता हुआ वह युवक भी वहाँ आ पहुँचा। महात्मा के पास जाकर बोला–"आपने यहाँ कोई पतंग गिरती हुई तो नहीं देखी?"

महात्मा ने कहा–" हाँ बेटा, देखी तो है।"

युवक ने पूछा– "कहाँ है?"

महात्मा बोले– "अन्दर मेरी कुटिया में रखी है।"

युवक ने कहा– "यह पतंग मेरी है।"

महात्मा बोले– "तेरी है बच्चा तो तू ले जा। मैं तेरी पतंग का क्या करूँगा!"

पतंग देकर महात्मा ने पूछा– "बेटा, क्या तू प्रतिदिन इस प्रकार पतंग उड़ाता है?"

युवक ने कहा – "नहीं जी! कभी–कभी उड़ाता हूँ। जब मित्र न आयें और जब ताश व जुए का दौर न चले तो अकेला मैं क्या करूँ?"

महात्मा बोले– "तो तू ताश और जुआ भी खेलता है?"

युवक ने कहा – "जब कभी पीने–पिलाने का अवसर न मिले, मित्र लोग आये हों, तब फिर क्या करें?"

महात्मा बोले– "अरे! तू शराब भी पीता है?"

युवक ने कहा– "जी हाँ! यदि कभी वेश्याओं के यहाँ जाने, नाच देखने और गाना सुनने का अवसर न मिले तो..."

महात्मा चिल्लाकर बोले– "अरे, तो तू यह कर्म भी करता है? किस ओर जा रहा है तू? किसने तुझे सर्वनाश के मार्ग पर चला दिया? यह तो मृत्यु का मार्ग है बच्चे! जीवन का मार्ग नहीं है। देख, धोखे में न रह! यौवन केवल एक बार आता है जीवन में, चला जाय तो फिर नहीं आता। अरे, क्यों नष्ट कर रहा है यौवन को? आज तेरे शरीर में शक्ति है, आँखों में ज्योति, मुख पर सौंदर्य, हाथों में बल है। आज यदि सुमार्ग पर न आया तो फिर प्रयत्न करने पर भी नहीं आ पायेगा। आज तू पहाड़ों का सीना चीर सकता है। तूफानों को ललकार सकता है। सागरों की छाती पर सवार हो सकता है। आज तुझे सूर्य और चन्द्रमा खिलौने प्रतीत होते हैं, परन्तु समय आयेगा, जब तू हाथ हिलाना चाहेगा और वह हिलेगा नहीं। पाँव से चलना चाहेगा और वे चलेंगे नहीं। आज तेरी आँखें आकाश में देखती हैं, परन्तु समय आयेगा, जब पास रखी लाठी भी तुझे दिखाई न देगी। अभी समय है, सँभल सके तो सँभल, नहीं तो फिर यह समय कभी आयेगा नहीं।"

महात्मा ने इस प्रकार कहा तो नौजवान चौंका। महात्मा की वाणी में प्रभाव था। वे सच्ची बात कह रहे थे। इससे युवक के मन पर चोट लगी और वह बेचैन हो उठा; हाथ जोड़कर बोला–"महाराज! ऐसी कभी पहले नहीं सुनी। आप आज्ञा दें तो कभी–कभी आपके पास आ जाया करूँ।"

महात्मा ने कहा–"तुम जब भी चाहो, आ सकते हो। मेरे यहाँ कोई रोक–टोक नहीं।"

वह युवक प्रतिदिन महात्मा जी के पास आने लगा। महात्मा जी ने उसे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि की बातें सुनाईं। वे हृदय से युवक को सुधारना चाहते थे। युवक के हृदय में लगन थी। उसने शीघ्रता से इन बातों को सीखा। महात्मा जी ने इस युवक को दस भट्टियों में डालकर कुन्दन बना दिया। उसकी पुरानी आदतों का चिन्ह भी मिट गया। अब वह यम–नियमों का पालन करता, कई–कई घण्टे आसन लगाता। कई प्रकार के प्राणायाम करता, ध्यान भी लगाता। महात्मा ने उसे सब–कुछ बता दिया। 'प्राणायाम उत्थान' की विधि भी बता दी कि किस प्रकार पाँव के अँगूठे से लेकर शरीर के प्रत्येक अंग से प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचा दिया जाता है। यह सब–कुछ बताया, परन्तु समाधि की विधि नहीं बताई।

एक दिन युवक ने कहा– "महाराज! आपने सब–कुछ बताया, परन्तु समाधि लगाने की विधि तो बताई ही नहीं?"

महात्मा हँसकर बोले– "बतायेंगे, अभी जल्दी क्या है?"

कुछ समय व्यतीत हुआ तो युवक ने कहा–"महात्मा जी, अब?"

महात्मा जी ने फिर टाल दिया।

अन्त में एक दिन युवक ने दुःखी होकर कहा– "महाराज! आख़िर कब तक परीक्षा देनी होगी? मुझमें कौन–सी कमी है, जिसके कारण आप मुझ पर कृपा नहीं कर रहे?"

महात्मा उसे पास बिठाकर बोले–"कृपा करने की बात नहीं है बेटा! जिस समाधि–अवस्था में तू जाना चाहता है, वहाँ पहुँचने से पूर्व घर–बार, संसार और परिवार का मोह छोड़ देना पड़ता है। इतने दिनों से मैं प्रतीक्षा कर रहा था, सोचता था कि स्वयं ही समझकर इस मोह को छोड़ देगा। परन्तु देखता हूँ कि तू इस मोह को छोड़ नहीं पाता। इसलिए समाधि लगाने की विधि तुझे बता नहीं सका।"

युवक ने कहा– "परन्तु गुरुदेव! इस मोह को कैसे छोड़ दूँ? यह तो सत्य है कि मेरी माँ है और पिता है, मेरी पत्नी है...."

महात्मा बोले– "नहीं बेटा! यह सत्य नहीं, वहम है। जिन्हें आज तू माता, पिता और पत्नी कहता है, ये सदा से तेरे माता, पिता और पत्नी थे नहीं, सदा रहेंगे भी नहीं। सच्ची माता, पिता और मित्र तो वह परमात्मा है, जिसके लिए शास्त्र कहता है:–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

तू ही माँ है, तू ही पिता है, तू ही मेरा साथी है, तू ही मेरा धन है। तू ही महल और मकान है, तू ही मेरा सब–कुछ है, "मेरे देवताओं के देवता!"

युवक ने कहा– "यह सत्य है गुरुदेव, कि ईश्वर हमारा सब–कुछ है, परन्तु माता–पिता और दूसरे लोग भी सत्य हैं। उनसे मैं इन्कार कैसे कर सकता हूँ? भूल कैसे सकता हूँ? मेरे पिता मेरे लिए प्राण देते हैं। मुझे थोड़ा–सा कष्ट हो जाय तो बेचैन हो उठते हैं। मेरी माँ तो एक दिन भी मुझे देखे नहीं तो उसके लिए संसार अन्धकारमय हो जाता है और मेरी पत्नी तो हर समय मेरे नाम का जाप करती रहती है। आप कहते हैं, इनके मोह को छोड़ दें। कैसे छोड़ दूँ?"

महात्मा बोले– "तू वहम में फँस गया है बच्चे! कोई तेरे लिए प्राण नहीं देता, कोई तेरे लिए बेचैन नहीं होता, कोई भी तेरे नाम का जप नहीं करता। इस संसार का प्रेम केवल स्वार्थ का प्रेम है। सब लोग अपने लिए तुझे प्यार करते हैं। जब तक शरीर में शक्ति और जेब में पैसा है, तभी तक ये सब लोग तुझे चाहते हैं। जब शरीर में शक्ति और जेब में पैसा न रहेगा, तब कोई तुझे चाहेगा नहीं।"

युवक ने कहा– "यह बात तो ठीक प्रतीत नहीं होती।"

महात्मा बोले– "अच्छा, मेरी एक बात मान। आज तू घर जायेगा न! तू अपनी माँ से कहना– तबीयत बहुत खराब है, पता नहीं क्या हुआ है। फिर अपने सोनेवाले कमरे में जाकर अपने पलँग पर लेट जाना। प्राण रोकने की विधि तू जानता है, प्राण रोक लेना। तुझे सुनाई सब–कुछ देगा, परन्तु तू बोलना मत! लाश की भाँति पड़े रहना और देख, प्राण रोकने से पूर्व अपनी माँ से यह भी कहना कि 'यदि मैं मर जाऊँ तो श्मशान में ले–जाने से पूर्व मेरे गुरुजी को बुला लेना। वे मुझे देख लें, उसके पश्चात् श्मशान में ले–जाना।' जा ऐसा कर, फिर तुझे मेरी बात समझ में आयेगी।"

युवक घर पहुँचा। माँ को देखते ही बोला–"माँ! पता नहीं आज मुझे क्या हुआ जाता है। दिल छुटा जाता है। साँस रुका जाता है। खड़ा रहने की शक्ति नहीं। ऐसा लगता है, जैसे प्राण निकल जायेंगे।"

माँ ने घबराकर कहा– "ऐसी बात न कह बेटा! तेरे प्राण क्यों निकलें मेरे निकल जाएँ। तू थक गया है। थोड़ी देर विश्राम कर ले, तबीयत ठीक हो जायेगी।"

युवक ने कहा –हाँ, मैं विश्राम करूँगा। अपने कमरे में लेटता हूँ। परन्तु यदि मुझे कुछ हो जाए, यदि मैं मर जाऊँ तो श्मशान में ले–जाने से पूर्व गुरु जी को बुला लेना। ऐसा करना भूलना नहीं!"

माँ बोली–"कैसी बातें करता है तू! तुझे कुछ नहीं होगा। जा, थोड़ा विश्राम कर ले। मैं अभी तेरे पिता जी को बुलाती हूँ।"

युवक अपने कमरे में गया। पलँग पर लेटा। कुछ देर पश्चात् उसने प्राणायाम के द्वारा अपने प्राण चढ़ा लिये। साँस रुक गई। थोड़ी ही देर में शरीर ठण्डा होने लगा। कोई आध घंटे पश्चात् उसकी पत्नी अन्दर आ गई। उसने देखा, हिलाया, बुलाया, नब्ज़ देखी और चीख़ती हुई बाहर आ गई; बोली–"माताजी! ओ माता जी! देखो वह अन्दर क्या हो गया है?" पत्नी ने सिसकते हुए फिर कहा– "वे ....वे बोलते नहीं, हिलते नहीं, शरीर ठण्डा है!"

माँ दौड़ती हुई अन्दर गई; देखा – पुत्र का शरीर बर्फ की भाँति ठण्डा है। उसने माथा पीट लिया। घर में शोक छा गया। दुकान से पिताजी दौड़े–दौड़े आये। डॉक्टर, वैद्य, हकीम भी आये। सबने देखा। सबने कहा – "यह तो समाप्त हो चुका। इसमें कुछ शेष नहीं।"

घर में रोना–पीटना आरम्भ हो गया। रोनेवालों की चीख़ों से घर की दीवारें गूँज उठीं। मुहल्लेवाले भी आये। सब रो–रोकर शोक प्रकट करने लगे। सब कहने लगे–देखो कितना अच्छा हो गया था यह युवक! जब से साधु के पास गया, तब से जैसे इसका जीवन ही बदल गया था। सबके साथ मीठा बोलता था। सबके काम आता था। सबकी सहायता करता था। और अब....

परन्तु कब तक रोते वे लोग! मुहल्लेवालों ने कहा– "रोना तो सदा का है, परन्तु अब तो यह केवल मिट्टी है। उठाओ इसे, ले चलो श्मशान, अन्यथा बदबू उत्पन्न हो जायेगी।"

तब होने लगी तैयारी। सारा सामान आ गया। शरीर को नहला दिया गया। कफन भी ओढ़ा दिया गया। अर्थी पर रखने लगे तो माँ को बेटे की बात याद आई। रोती हुई बोली– "अरे ठहरो! उसने कहा था कि मुझे श्मशान ले–जाने से पूर्व मेरे गुरुजी को बुला लेना।"

कुछ लोग जंगल की ओर दौड़े। साधु के पास पहुँचे; बोले– "आपके पास वह युवक आता था न! चलिये, उसका देहान्त हो गया है। घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी अर्थी को श्मशान ले–जाने की तैयारी हो चुकी है। चलकर देखो!"

महात्मा ने कहा– "अच्छा चलो, मैं देखता हूँ।" और कुटिया में जाकर एक पुड़िया उठा लाये। इस पुड़िया में उन्होंने मिश्री पीसकर बाँध रखी थी। मिश्री की पुड़िया लेकर वे युवक के घर पहुँचे तो देखा कि चीख़ों से सारा घर ही नहीं, मुहल्ला भी गूँज रहा है।

महात्मा बोले– "देखो, थोड़ी देर के लिए यह रोना बन्द करो। मैं इसका गुरु हूँ। मुझे देखने दो, इसे क्या हुआ है?"

सब लोग चुप हुए तो महात्मा ने कफ़न उठाकर उसे युवक को देखा। उसे हाथ से टटोला; बोले– "मर तो यह गया है, परन्तु अभी एक आशा शेष है। यदि कोई व्यक्ति साहस करे तो जीवित हो सकता है।"

सब लोगों ने एक–साथ कहा–"जीवित हो सकता है! कैसे?"

महात्मा बोले–"देखो, यमराज के दूत यहाँ विद्यमान हैं। वे अपनी बलि लेंगे अवश्य। यदि कोई दूसरा व्यक्ति इसके स्थान पर अपनी जान देने को तैयार हो तो मैं यम के दूतों से कह सकता हूँ कि वे उसको ले–जाएँ, इस युवक को नहीं।" और अपने झोले से

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

दम्पति के प्राण प्रायश्चित्त

● **देवनारायण भारद्वाज**

पति–पत्नी संख्या में दो दिखाई देते हैं, किंतु यह एक प्राण दो देह के समान होते हैं। इसके प्रत्यक्ष प्रदर्शन हेतु एक कथा प्रचलित है। अकबर एवं बीरवल भ्रमण करते हुए राजपूताना की भूमि पर पहुँच गये। अकबर ने एक झाड़ी के पास छोटे से गड्ढे में थोड़ा जल भरा हुआ देखा। वहीं पर एक हिरण एवं हिरणी मृतावस्था में पड़े थे। अकबर ने बीरवल से जिज्ञासा इस प्रकार प्रकट की–

झुके न दीखे बावड़ी, नहीं लगे हैं वाण।
कहो बीरवल आप ही किस विधि निकले प्राण।।

यह सुनकर प्रत्युत्पन्नमति विद्वान् बीरवल ने बादशाह अकबर को बताया–जहाँपनाह! ये दोनों पति–पत्नी हैं। भीषण गर्मी में व्याकुल होकर पानी पीने के लिए इस गड्ढे पर आ गये, किंतु पानी थोड़ा था, एक के लिए भी पर्याप्त नहीं था। ये दोनों एक दूसरे को पानी के लिए कहते रह गये, किंतु पानी कोई भी नहीं पी सका। अस्तु–

जल थोरा नेहा घना, लगे प्रेम के वाण।
तू पी तू पी कहत थे अस विधि निकले प्राण।।

यह है वैदिक विवाह–संस्कार प्रदत्त आदर्श दाम्पत्य की पारस्परिक आत्मसमर्पण की भावना। महात्मा विदुर ने अपने नीतिशास्त्र अध्याय आठ के चौबीसवें श्लोक में यों लिखा है–

धृता शिश्नोदरं रक्षेत् पाणिपादं च चक्षुषा।
चक्षुः श्रोत्रे च मनसा मनो वाचं च कर्मणा।।

अर्थात् खान–पान एवं भोग–विलास में अधीर न होवे। सम्यक् रूप से देखभाल कर हाथ–पांव चलाये अर्थात् ठीक प्रकार से देखकर वस्तुओं के ग्रहण से हाथों को और मार्ग देखकर चलने से पैरों की रक्षा करें। मन से आँख और कान पर मन का नियंत्रण रखें, और मन तथा वाणी की कर्मों के संयम द्वारा रक्षा करनी चाहिए। विदुर जी ने छठे अध्याय के श्लोक सैंतीस में क्या खूब मागदर्शन किया है–

धृतिः शमो दमः शौचं कारूण्यं वागनिष्ठरा।
मित्राणां चानभिद्रोहः सप्तैताः समिधः श्रियः।।

अर्थात्–धैर्य्य,मनोनिग्रह,इन्द्रियानिग्रह, व्यवहार में पवित्रता, दयालुता, मधुर वाणी और मित्रों से द्रोह न करना–ये सात गुण लक्ष्मी–धन सम्पत्ति को बढ़ाने वाले हैं। सफल जीवनार्थ ये गुण हर व्यक्तिविशेष के लिए अनुपालनीय हैं। परिवार एवं समाज में इनके व्यवहार से पूर्व हर दम्पत्ति यदि इनका अभ्यास परस्पर कर लेता है, तो उसे ऋषि–मनीषा द्वारा निर्धारित वैदिक विवाह की वैधानिक प्रक्रिया सप्तपदी के अन्न, ऊर्जा, ऐश्वर्य, उल्लास, प्रजा, ऋतुवर्तन एवं सखापन के सात वरदान सहजरूपेण प्राप्त हो जाते हैं।

जिस प्रकार जीवजन्तु एवं मनुष्यों के जीवन का आधार उसके प्राण होते हैं। प्राण गये तो वे मृत हो जाते हैं। उसी प्रकार दम्पत्ति की जीवन्तता के लिए प्राण उनकी पारस्परिक प्रीति में निहित होते हैं। प्रीति गयी तो भौतिक रूप से पृथक्–पृथक् जीवित तो रह सकते हैं, किंतु उनके दाम्पत्य की हत्या हो जाती है। नैसर्गिक न्याय के अनुसार वैदिक संस्कृति में विवाह बंधन के बाद उसके पृथक्करण का कोई नियम नहीं है। यहाँ तो कवि इसके गठबंधन की दृढ़ता व मधुरता की भूरि–भूरि सराहना करते हैं। यथा–

जहाँ गाँठ तँह रस नहीं यह जानत सब कोय।
मडुंए तर की गाँठ में, गाँठ गाँठ रस होय।।

उपरिलिखित सात पगों की सप्तपदी के हर पग पर प्रफुल्लता की गठरी बँधती तथा बढ़ती चली जाती है। घर–परिवार समाज में ईर्ष्या–द्वेषधारी अनेक तत्व ऐसे होते हैं जो इनके प्रीति–बंधन को सह नहीं पाते हैं और उसे तोड़ने के लिए अवसरों की प्रतीक्षा उसी प्रकार करते रहते हैं, जिस प्रकार यह ग्रामीण कहावत चरितार्थ हो उठे–**रांड के पैर सुहागिन लागी**– हो जा बहना मोसी। ऐसी ही एक उपेक्षित परिवारिक महिला नववधू को नीचा दिखाने के लिए रसोई में उसके द्वारा बनाई जाने वाली दाल में कभी कंकड़ कभी अधिक नमक मिला दिया करे, किंतु मधुरभाषिनी नववधू के प्रेम–व्यवहार के कारण उसे कोई सफलता नहीं मिल पाये। अन्ततः उसने एक पाखण्डी ज्योतिषी को उसके साथ लगा दिया।

महिला ने ज्योतिषी का परिवार में खूब मान–सम्मान किया। ज्योतिषी ने बारी–बारी से सबका भविष्य बताया और जब उस नववधू की बारी आई तो ज्योतिषी ने उसके कान में कह दिया, तेरा पति गधा है। इसकी जाँच तू रात में तब कर सकती है, जब वह सो जाये तब तू अपनी जीभ से पति की पीठ चाटकर देखना पीठ नुनखरी (नमकीन) लगेगी। ज्योतिषी तो बिगाड़ के लिए लगाये ही गये थे। इसके लिए उन्हें अच्छा–खासा धन भी मिला था। वे नववधू के पति के पास भी उनके कार्य स्थल पर पहुँच गये। उनको भी भविष्य की बातों को बताते हुए कह दिया–तेरी नयी–नयी आई वधु सुन्दर तो बहुत हैं किंतु वह पिछले जन्म की नागिन है। पति ने पूछा इसका क्या प्रमाण है। उन्होंने कहा रात्रि में जब तू सो जायेगा, तो वह अपनी लम्बी जीभ से तेरी पीठ चाटती हुई मिलेगी। यही हुआ–एक तीर से दो शिकार हो गये। भला हो सच्चे संत का जिन्होंने उसके पति के पूछने पर उसे समझा दिया कि इस गर्मी में सभी के पसीना निकलता है। पसीने के साथ शरीर का मल विक्षेप बाहर आता है। इसीलिए सभी का पसीना नमकीन ही होता है। पता करना वह ज्योतिषी तेरे घर से ही होकर तुझे भड़काने आया होगा। इसीलिए ऋषिका सावित्री सूर्या ने हर दम्पत्ति को इस प्रकार सावधन किया है–

य इत् तत् स्योनं हरति ब्रह्मा वासः सुमंगलम्।
प्रायश्चित्तिं यो अध्येनि येन जाया न रिष्यति।।

भावार्थ– अपने हृदय को विशाल बनाने वाला ज्ञानी पुरुष सुखकर उत्तम मंगल के साधनभूत वस्त्रों को घर में लाये, जो पत्नी के लिए सुखकर, स्वास्थ्यकर, सुन्दर हों, वस्त्र वितान के साथ ही व्यवहार की तान भी माधुर्यपूर्ण तानता हो, जिससे पत्नी को रुष्टतापूर्ण कष्ट का आभास न हो। पति का ब्रह्मत्व, बड़प्पन या उसकी विशाल हृदयता इसी में है कि वह स्वयं तपस्यापूर्वक जीवन जीते हुए प्रायश्चित्त का पूर्ण ध्यान रखता हो। अपने द्वारा किये गये अवांछित व्यवहार के लिए पश्चात्ताप करते हुए, सुधारात्मक प्रायश्चित करता हो। प्रायः या प्रायः किसी शब्द के साथ पहले उपसर्ग या बाद में प्रत्यय के रूप में जुड़कर मुख्य शब्द की समतल्यता का बोध कराते हैं। प्रायश्चित (प्रायः+चित) का भावाशय यही बनता है कि पति या पत्नी के किसी अवांछित व्यवहार के कारण चित्त में कोई प्रतिकूलता आ गयी हो, तो स्पष्टीकरण द्वारा चित्त में फिर से अनुकूलता का साम्राज्य स्थापित हो जाये।

सम्पन्न पति अपनी पत्नी के लिए वस्त्राभूषण एवं सुविधायें तो जुटाये, किंतु व्यवहार में कटुता लाये तो सुविधाओं के बाद भी पत्नी के चित्त में खिन्नता से भिन्नता बढ़ती ही जायेगी। पति महोदय ने पत्नी को अति मूल्यवान् साड़ी लाकर दी और भेंट करते समय कह दिया–लो ऐसी बहुमूल्यवान् सुन्दर रेशमी साड़ी तुम्हारे बाप ने कभी लाकर नहीं दी होगी। इस कथन से साड़ी का मूल्य तो जितना है उतना ही रहा, किंतु पति महोदय का मूल्य अवश्य घट गया। पति ने अपनी सांवली को पीली रेशमी साड़ी लाकर दी। पत्नी बहुत प्रसन्न हुई। वह बसंत पंचमी के दिन उसे पहनकर अपने पति के पास आई और मुस्कराते हुए पूछ बैठी कि श्रीमान् जी मैं कैसी लगती हूँ। पति थे साहित्यकार उन्हें उपमायें देना खूब आता था–बोल पड़े जैसे पीले–पीले फूले हुए सरसों के खेत में कोई भैंस खड़ी पंगुराय। साहित्यकार पति को अपमार्जन का परिमार्जन करना भी आता था। बोल पड़े श्रीमती जी! क्षमा करना। यह मैं आपके लिए नहीं कह रहा हूँ, प्रत्युत पत्रिका में छपे हुए चुटकले को सुना रहा हूँ। शारीरिक पीड़ा को दूर करने के लिए एक ऐलोपैथिक औषधि आती है, जिसका नाम है ऐस्प्रो (Aspro) अर्थात् जैसे पूर्व में यह शरीर पीड़ा रहित था। दवाई से पीड़ा दूर होकर फिर से पूर्ववत् हो गया। पश्चात्ताप के शमन के लिए प्रायश्चित्त भी यही काम करता है, जिससे दाम्पत्य–जीवन स्थिर ही नहीं दिनों दिन देदीप्यमान होता चला जाता है। बातें तो बहुत हैं; किंतु मनोहर श्रृंगारपूर्ण रसधार बहाकर उपसंहार करते हैं।

भारतवर्ष में अंग्रेज़ों के क्रूर शासन काल में एक शहर कोतवाल थे नानकचन्द, जिनके पुत्र मुंशीराम पुलिस अधिकारी की सन्तान होने से तथा अति सम्पन्न रईस–पुत्रों के साथ के कारण अतिदुर्व्यसनी एवं भोग–लोलुप बन गये थे। जब उनके विवाह की तैयारी हुई तो वे अपनी भावी पत्नी में अंग्रेज़ी उपन्यासों की नायिकाओं की कल्पना में मगन रहने लगे थे। विवाह के अतिव्यस्त धूम–धड़ाके के बाद जब वे प्रथम बार अपनी नववधु से मिले, तो वह नवयुवती न होकर अभी बालिका सरीखी ही दिखाई दी। मुंशीराम ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मेरी धर्मपत्नी की आयु उस समय 16 वर्ष की होती, और परस्पर प्रसन्नतापूर्वक आँखें खोलकर विवाह होता तो मैं उस अन्धकूप में गिरने से बच जाता, जिसमें आगामी दो–ढ़ाई वर्ष तक गिरा रहा। एक रात्रि शराब में धुत होकर घर पहुँचा तो पुराने भृत्य बढ़े पहाड़ी पाचक ने सहारा देकर ऊपर बरामदे के पास पहुँचा दिया। उल्टी होने लगी। उसी समय कोमल छोटी अँगुलियों वाले हाथों में मैं बालक समान पहुँच गया था। उसने मुझे स्वच्छ करके पलंग पर लेटाकर मेरा सिर दबाया। मैंने अनुभव किया कि मैं मातृशक्ति की छत्रछाया में निश्चिन्त लेट गया हूँ। आधी रात के बाद उसने अंगीठी से दूध उतारकर उसमें मिश्री मिलाकर मेरे मुँह से लगा दिया। दूध पीने पर होश आया, और अंग्रेजी उपन्यास के दृश्य मेरे मस्तिष्कि से निकल गये। मैंने उठकर पत्नी को पास बैठाकर कहा–'देवी! तुम बराबर जागती रहीं, भोजन तक नहीं किया। अब भोजन कर लो। उत्तर ने मुंशीराम को व्याकूल कर दिया। किंतु उस व्याकुलता में भी आशा की किरण दिखाई दी। बालिका वधू ने कहा–'आपके भोजन किये बिना मैं कैसे खाती। मैंने अपनी गिरावट की कहानी सुनाकर देवी से क्षमा की प्रार्थना की। उस रात बिना भोजन किये दोनों सो गये और दूसरे दिन से ही मुंशीराम का जीवन ही बदल गया। यह हुआ पति द्वारा प्रायश्चित्त किये जाने का एक आदर्श, जिसने मुंशीराम को विधिवत्ता, आर्यसमाज का कर्णधार, गुरुकुल का संस्थापक आचार्य मुंशीराम, महात्मा मुंशीराम, स्वातन्त्र्य योद्धा युवा उद्धारक आर्यसंन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। वेद के उपरोक्त सूक्त के 37वें मंत्र में विवाह विधि के आशीर्वादों की चर्चा इस प्रकार की गई है–

इदमहं रुशन्तं ग्राभं तनूदूषिमपोहामि।
यो भद्रो रोचनस्तमुदचामि।।

अर्थात् उपासनापूर्वक वीर्यरक्षण के संयम द्वारा नवदम्पति रोग एवं दुष्ट व्यवहार से बचते हैं और मंगलमय सुन्दर सत्कार को प्राप्त कर परिवार–समाज राष्ट्र एवं विश्व में यश–ऐश्वर्य पूर्ण सार्थक जीवन के आनन्द को बढ़ाते हैं।

'वरेण्यम्' अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़–202001(उ.प्र.)

सत्यासत्यविवेक–महर्षि दयानन्द के महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक कथन

● भावेश मेरजा

(**भूमिका :** बरेली में 25.26.27 अगस्त 1879 को आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा पादरी टी.जे. स्कॉट के बीच हुए शास्त्रार्थ का वर्णन 'शास्त्रार्थ–बरेली' अथवा 'सत्यासत्यविवेक' नामक ग्रन्थ में उपलब्ध है। इस शास्त्रार्थ के तीन विषय थे – 1. पुनर्जन्म, 2. क्या ईश्वर देह धारण करता है ? तथा 3. ईश्वर पाप को क्षमा भी करता है ? इस शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रस्तुत किए गए वक्तव्य में वैदिक धर्म विषयक अनेक सैद्धान्तिक तथा दार्शनिक बातों का समावेश पाया जाता है। पाठकों को ऐसी कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का परिचय प्राप्त हो सके इस उद्देश्य से उपर्युक्त ग्रन्थ से किया गया यह संकलन प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. जीव अल्पज्ञ है, इसलिए पूर्वजन्म की बात को याद नहीं रख सकता।
2. शब्द गुण होता है और वह द्रव्य कभी भी नहीं हो सकता।
3. वह (परमेश्वर) अपने स्वभाव के विरुद्ध कोई कार्य चरितार्थ नहीं कर सकता।
4. जब वह (परमेश्वर) सर्वव्यापक है तो एक देह में आना या एक देह से निकलना सर्वथा असम्भव है।
5. तर्क, शास्त्र, प्रमाण और अनुभव आप्त पुरुषों का ही सत्य होता है, प्रत्येक जनसाधारण का नहीं।
6. जो–जो जीव में स्वाभाविक गुण हैं, वे न्यूनाधिक कभी नहीं होते।
7. जीव का स्वाभाविक गुण एक–सा रहता है, परन्तु नैमित्तिक गुण घटते–बढ़ते रहते हैं। इसलिए जीव एक से हैं।
8. जीव के कर्म इत्यादि अनादि हैं और ईश्वर का न्याय करना इत्यादि भी अनादि हैं।
9. 'न्याय' उसका नाम है जिसने जितना जैसा काम किया उसको उतना वैसा ही फल देना।
10. वेद आदि पुस्तकों में (पापों को) क्षमा करना कहीं नहीं लिखा है।
11. जीवों का बिना स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के सुख–दुःख का भोग करना असम्भव है।
12. सत्य के कहने में अशिष्टता कभी नहीं हो सकती। अशिष्टता तो झूठ के कहने में होती है।
13. जिनका जिनसे विरोध होता है, वे उनके विषय में उलटा–सीधा कहा ही करते हैं।
14. आशावादिता के बिना मनुष्य सुधर नहीं सकते।
15. यह बड़े आश्चर्य की बात है कि अंग्रेज़ी जानने वाले वेदों के सिद्धान्तों का निर्णय करें। यह बात तो ऐसी ही है, जैसे कि कोई संस्कृत पढ़कर अंग्रेज़ी के सिद्धान्तों का निर्णय करे।
16. मैं अद्वैतवादी हूँ, क्योंकि मैं ईश्वर को एक मानता हूँ।... **'अद्वैत'** विशेषण परमेश्वर का है, किसी दूसरे का नहीं। इसके कहने से यह सिद्ध हुआ कि परमेश्वर एक है, जीव अनेक हैं, और जगत् का कारण अनेक प्रकार का है।
17. परमेश्वर अपने स्वाभाविक गुण के अनुकूल काम करने में लाचार कभी नहीं है, परन्तु अवतार के धारण करने में तो लाचार ही मानना होगा।
18. यह (परमेश्वर) न्यायाधीश है। जीवों के जैसे पाप–पुण्य होते हैं, वैसा ही उनका फल देना अवश्य है, क्योंकि वह सच्चा न्यायकारी है।
19. परमेश्वर के गुण गति करते हैं – यह सर्वथा झूठी बात है, क्योंकि वह गुण है, द्रव्य नहीं। गतिशील द्रव्य होता है, गुण नहीं।
20. जो सर्वव्यापक है वह देह धारण करता है, या करे, या छोड़े – यह कहना सर्वथा असम्भव है और जब वह (परमेश्वर) सर्वव्यापक है, तब देह धारण करने को कहाँ से आया? क्या ऊपर या नीचे से अथवा बाहर या बगल से ? जो कहें कि किसी तरफ से आया तो फिर तो वह सर्वव्यापक न हुआ। और जो कहें कि सर्वव्यापक है तो कहीं से आना साबित नहीं हो सकता।
21. जब (परमेश्वर) सर्वव्यापक है तो उसने देह धारण नहीं किया, अपितु उसने तो संसार का अणु–अणु धारण कर रखा है।
22. जब परमेश्वर सृष्टि करता (अर्थात् रचता) है, तब निराकार स्वरूप से या साकार से? जो कहो कि निराकार स्वरूप से, तो ठीक है; और जो कहो कि देहधारी होकर तो उसका सृष्टि रचना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि त्रसरेणु आदि पदार्थ सृष्टि का (उपादान) कारण रूप, उसके वश में कभी नहीं आ सकते हैं।
23. परमेश्वर का पुनर्जन्म (अवतार) नहीं होता, क्योंकि वह अनन्त और सर्वव्यापक है। वह शरीर में नहीं आ सकता। वह तो नित्य मुक्त है। बन्धन का काम कभी नहीं करता।
24. जब जीव का पाप अधिक और पुण्य कम होता है तब उसे बन्दर आदि का शरीर धारण करना पड़ता है और जब पाप–पुण्य बराबर होते हैं तब मनुष्य का। जब पाप कम और पुण्य अधिक होता है तब विद्वान् इत्यादि का।
25. परमेश्वर अपने गुणों से 'सगुण' है अर्थात् सर्वज्ञ आदि गुणों से; और 'निर्गुण' – (उपादान) कारण के जड़ आदि गुण तथा जीव के अज्ञान, जन्म, मरण, भ्रम आदि गुणों से रहित होने से परमात्मा 'निर्गुण' है। इसलिए यह निश्चय जानना चाहिए कि कोई भी पदार्थ इस रीति से सगुणता और निर्गुणता से रहित नहीं है।
26. (पापों को) क्षमा करना तो चारों वेदों में कहीं भी नहीं लिखा। जब क्षमा करना है ही व्यर्थ, तो फिर ऐसी मिथ्या बातों का उपदेश वेदों में क्यों हो सकता है ?
27. जीव और जीव के स्वाभाविक गुण, कर्म और स्वभाव अनादि हैं और परमेश्वर के न्याय करना आदि गुण भी अनादि हैं।
28. जो–जो जीव के पाप और पुण्य आदि कर्म प्रवाह से अनादि चले आते हैं, उनका ठीक–ठीक फल पहुँचाना ईश्वर का काम है।
29. बारम्बार शरीर का धारण करना भी जीव को अवश्य है, क्योंकि क्रियमाण कर्म नये–नये करता जाता है, उनका संचित और प्रारब्ध भी नया–नया होता चला जाता है।
30. (परमेश्वर और जीव) – दोनों अनादि होने से बराबर (अभिन्न या समान) नहीं होते, जब तक कि उनके सब गुण बराबर न हों। परमेश्वर अनन्त है और जीव सान्त। परमेश्वर सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ। परमेश्वर सदा पवित्र और मुक्त तथा जीव कभी पवित्र, कभी बन्ध और कभी मुक्त। इसलिए दोनों बराबर नहीं हो सकते।
31. जो कर्म का सिद्धान्त न माना जाये तो सृष्टि में बुद्धिमान्, निर्बुद्धि और दरिद्र, राजा और कंगाल की अवस्था ईश्वर किस प्रकार कर सके? क्योंकि इसमें तरफदारी आती है और पक्षपात से उसका न्याय ही नष्ट हो जाता है। जब कर्म के फल हैं तो परमेश्वर पूर्ण न्यायकारी बनता है, अन्यथा नहीं। और ईश्वर अन्याय कभी नहीं करता।
32. आग के संयोग से जल में उष्णता आती है वह नैमित्तिक, और जो आग में उष्णता व दाहकता है वह स्वाभाविक है।
33. सच्ची तो उस किताब की बात हो सकती है कि जिसमें आरम्भ से अन्त तक एक भी बात झूठ न हो, क्योंकि ईश्वर के गुण–कर्म–स्वभाव से अनुकूल वेद ही पुस्तक है, दूसरी नहीं। सिवाय वेद के, उपदेश के किसी भी किताब में ठीक–ठीक सब बातों का निश्चय नज़र नहीं आता है। इसलिए सबसे उत्तम वेद की ही शिक्षा है, दूसरे की नहीं।
34. जब ईश्वर सर्वज्ञ है तो उसके न्याय आदि गुण और कर्म भी भूल और भ्रान्ति आदि सब दोषों से रहित हैं। इसलिए जब ईश्वर अपने स्वभाव के विरुद्ध कोई कार्य कभी कर ही नहीं सकता तो फिर न्याय के प्रतिकूल क्षमा वह कैसे कर सकता है?
35. ईश्वर जो दयालु है तो दया का भी वही अर्थ है, जो न्याय का है। क्षमा करना दया नहीं है। जैसे कि एक डाकू पर कोई दया करे अर्थात् क्षमा करे तो क्या वह दयालु गिना जा सकता है? कभी नहीं। क्योंकि हजारों जीवों को उसने (ईश्वर ने) दुःख दिया है। जब डाकू (को) क्षमा कर दिया जायेगा तब तो वह बड़े साहस के साथ और भी खूब डाके मारेगा।
36. जो शास्त्रार्थ का विषय है और जिसको सिद्ध करने की प्रतिज्ञा प्रथम...की थी, उससे दूसरा कथन (करना) न्याय–शास्त्र के अनुसार पराजय का सूचक है। इस प्रकार की पराजय को दार्शनिक भाषा में 'प्रतिज्ञान्तर' कहा जाता है।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात–392015, मो. 9897528247

मुझे रहम की दरख़ास्त करनी चाहिए या नहीं?

● स्व. श्री बलराज भल्ला

मैं कई महीनों के बाद जेल के बाहर निकला। यहाँ की हवा ही कुछ और थी। इधर–उधर सब्ज़ा देखकर आँखें तर करने का तो कोई मौका न मिला, झट ही साहिब के सामने पेश होना पड़ा। गौरांग ने पूछा "क्या तुम जानते हो, तुम्हारी कैद टूट गई है?" मेरे से 'न' का उत्तर पाकर उसने मुझे बतलाया कि मेरी कैद सात साल रह गई है और वह विशेष तौर से मुझे पूछना चाहता है, कि क्या मैं रहम की दरख़ास्त करना चाहता हूँ? क्योंकि हर एक कैदी को रहम की दरख़ास्त करने का हक है पर जेल मैनुअल साहिब को हिदायत देता है कि वह जहाँ तक हो सके, कैदियों को बिना किसी विशेष कारण के रहम की दरख़ास्त करने से रोके। मुझे विशेष तौर पर बुला कर क्यों पूछा गया? इसका कारण ढूँढ़ने के लिए मुझे बहुत मुश्किल का मुकाबला नहीं करना पड़ा। साहिब के हाथ में एक सरकारी लिफ़ाफ़ा पकड़ा हुआ था, उसकी ओर देखते हुआ आपने कहा– "लाट साहिब दरयाफ़्त करना चाहते हैं। हमारी समझ में तुम्हारे लिए अच्छा होगा, रहम की दरखास्त करो, तुम्हें बहुत फ़ायदा होगा।" इससे बढ़कर और इशारा क्या दिया जा सकता था? मैंने समझा या तो लाट साहिब मेहरबानी करना चाहते हैं या रहम की दरख़ास्त लेकर उसको 'नामंजूर' करने की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं। मेरा पहला ख्याल दुरुस्त था। परन्तु मेरे लिए कौन–सा पथ लेने के योग्य है? मुझे चंद क्षणों में ही जवाब देना था। मैंने तत्काल ही कहा, "मैं अभी इस बात का कोई उत्तर नहीं दे सकता। कारण मैं नहीं कह सकता, मेरे सम्बन्धी पैरवी कौंसिल में जाने का विचार रखते हैं या नहीं?" साहिब को मेरा उत्तर माकूल नज़र आया और उन्होंने कहा– "अच्छा, अभी एक पत्र लिख कर दरयाफ़्त कर लो।"

"पत्रों से फैसला नहीं हो सकता" मैंन कहा। "आप मुझे मुलाकात की इजाज़त दें।" मेरी समझ में यह बात मुश्किल थी, क्योंकि अभी थोड़े दिन पहले मेरी मुलाकात हो चुकी थी, और कैदियों को संबन्धियों से मिलने का हक छः महीने के बाद हुआ करता है। परन्तु साहिब ने बिना किसी विरोध के मुलाकात के लिए पत्र लिख देने की आज्ञा दे दी। यही नहीं, वरन् जेल रूटीन को छोड़ मुझे वहीं पत्र भी लिखवाने के लिए दे दिया गया। वापिस लौटने के समय जेलर ने पूछा, "हजूर, क्या इसकी तख्ती (हर एक कैदी के गले में एक लोहे की हसली रहती है। इसमें लवंडी की एक छोटी–सी तख्ती लगी रहती है, जिस पर हर एक के मुलाहिजे के लिए कैदी का जुर्म, तारीख जेल और तारीख रिहाई लिखी रहती है) बदल दी जावे?" आपने उत्तर दिया "अभी नहीं, जब सरकारी तौर पर कैद टूटने का हुक्म आएगा, तब तख्ती बदली जाए, यह तो सरकारी नियम है।" अब तो सब बात साफ़ हो गई। चीफ़ कोर्ट की खबर अभी आने वाली है। अन्दर आ जाने के बाद मुझे सोच विचार के लिए काफी समय था। प्रश्न था क्या मुझे रहम की दरखास्त करनी चाहिए या नहीं? किसी एक बात का विचार कर उसके परिणाम पर पहुँचने के लिए हमें अपनी दो इन्द्रियों का प्रयोग विशेष कर करना पड़ता है। एक तो हृदय और दूसरी मस्तिष्क। बहुधा दोनों की सम्मति एक–दूसरे के विरुद्ध होती है। कभी एक और कभी दूसरा बलवान् हो जाता हैं और इनके बल के साथ विचार का परिणाम भी पल्टा खा जाता है। हृदय की आज्ञा तो स्पष्ट थी। जातीय अभियोग वाले रहम न माँगने में अपना गौरव अनुभव करते हैं, तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए। हृदय को तो इसमें संदेह न था कि जिस हाथ ने तुम्हें पीड़ित किया है, जिसने तुम्हारी मान–हानि करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, उस हाथ से कोई भी दया स्वीकार करना अपने गौरव को मिट्टी में मिलाना है। दिमाग के विचार भिन्न थे। यदि तुम निर्दोष हो, तो तुम्हें इससे क्या कि यह अभियोग एक धारा के अनुसार चलाया गया है अथवा दूसरी के। अगर तुम्हें 'दया–प्रार्थना' से कोई फ़ायदा हो सकता है, तो फ़ायदा उठाओ।

दोषी और निर्दोषी के ख़्याल को एक तरफ़ छोड़ कर जिन पुरुषों ने तुम्हे दुःख दिया है, वे यदि अब तुम्हारा दुःख काटना चाहते हैं, तो तुम्हें इसमें क्या उज़र हो सकता है? फिर प्रश्न होता था, क्या सचमुच तुम्हें दया–प्रार्थना से कोई लाभ होगा? क्या तुम्हें नीचा दिखलाने के लिए यह कोई ढंग तो नहीं खेला गया, जब सरकार आप तुम्हें यह सजेशन देती है? दया–प्रार्थना के फैसले किस नींव पर होते हैं? क्या सचमुच दया–भाव से ही लोग रिहा कर दिए जाते हैं अथवा न्यायालय की न्यूनताओं को पूरा करने के लिए एग्जेक्यूटिव के लिए यह ढंग रखा हुआ है। यदि इसके अंदर केवल दया का भाव है, तो हृदय को हृदय से देना ही ठीक है। ऐसी अवस्था में मारने वाले से भीख माँगना अत्यन्त बुरी बात है। यदि इसका सम्बन्ध हृदय से कोई नहीं, यह केवल अन्तिम न्याय करने का एक और ढंग है, तो मुझे समझ में नहीं आता, हमारे जैसे अभियोगों में सरकार को दया–प्रार्थना–पत्र की अपेक्षा करने की आवश्यकता ही क्या है? साधारण अभियोगों में तो मैं मानता हूँ, सरकार बिना 'दया–प्रार्थना–पत्र' के कैसे किसी मिसल को देखने का ख्याल कर सकती है। परन्तु

हमने माना हों फरिश्ते, शैख़'जी; (पर)
आदमी होना बहुत दुश्वार है।

हमारे जैसे केस में यह मानना कि सरकार मिसलों से बेबहरा है, सरकार की सरकारी में शक करना है। खासकर जब सरकार स्वयं दया–प्रार्थना के लिए अनुरोध करती है। ऐसी अवस्था में मैंने दिल और दिमाग दोनों की सलाह से यह निश्चय किया कि यदि नौकरशाही का नेता सचमुच मुझे अपने न्याय का मुस्तहक समझता है, तो वह स्वयं ही बिना मेरे प्रार्थना–पत्र के अपने न्याय का एलान कर देगा और अगर यह केवल एक ढकोसला ही है, तो मेरे लिए किसी प्रकार की प्रार्थना करनी भी अनुचित है। इस संकल्प का जो परिणाम मैंने अपने सुपरिंटैंडैंट के आगे दया–प्रार्थना न भेजने की शक्ल में प्रकट किया, उसका असर मेरे जेल–जीवन पर क्या पड़ा, अनुभव करना कुछ कठिन नहीं।

कानूनी तौर पर जो कैदी अच्छा काम करते हों और नेक चलन हों, वे अपनी एक तिहाई कैद गुजारने पर "चौकीदार" बना दिये जाते हैं। जेल में इन लोगों को 'बिल्ले–वाला' कहते हैं, क्योंकि ये साधारण कैदियों से एक बैज से पहचाने जाते हैं। ये लोग तरक्की पाकर 'मेट' बन जाते हैं और इनको वहाँ "कालीवाला" कहते हैं। सबसे बड़ा रुतबा जो एक कैदी हासिल कर सकता है, इससे एक दर्जा ऊपर है और वह रुतबा एक "कैदी जमादार" का है। ये लोग जेल में "पीलीवाले" कहलाते हैं। इन तीनों किस्म के कैदी अफ़सरों के लिए साधारण शब्द 'नंबरदार' का प्रयोग होता है हर एक इकबारा कैदी जो ज़नाह, आग और ज़हर के मुकदमें में गिरफ़्तार नहीं हुआ, नंबरदार बन सकता है। यह तो है थीम, परन्तु पिक्चर में जेल की अन्य बातों की तरह यह भी भिन्न ही है। नंबरदारी की पहली सीढ़ी है "बिल्ला"। पाठक स्वयं जानते हैं बिल्ला बिना दूध के कैसे जी सकता है। इसलिए जो दूध का इंतजाम नहीं कर सकते, दारोगा लोग इन्हें बिल्ला कर ही देते हैं। कानून कहता है परेड के अन्दर जो हर सप्ताह होती है, कैदी को मनमानी प्रार्थना करने का अधिकार है। हाँ, उसको स्वीकार अथवा अस्वीकार करना साहिब की मर्जी पर निर्भर है। परन्तु प्रैक्टीकल के अन्दर अजीब ही हाल होता है। सुपरिंटैंडैंट तो अक्सर बदलते रहते हैं और गौरांग होने के कारण हमारे ढंगों को समझते ही नहीं। जेलर तो जेल को अपनी रियासत समझ कर डट जाते हैं, और ऐसे खुरांट होते हैं कि दयानतदार साहिबों के तले भी घास तक नहीं जमने देते। साहिब और दारोगा इकट्ठा दौरा करते हैं। कैदी ने बिल्ले का सवाल किया। दारोगा ने झट कहा, वाह, बिल्ला माँगते हो, पहले चार–पाँच सफ़ेद दाढ़ियों वाले तुम्हारी गवाही तो दें कि तुम भलेमानस हो। पीछे बिल्ले का सवाल करना। अगर चार–पाँच सफ़ेद दाढ़ी वाले पुरुषों से चित्रित रुपयों ने कैदी की भलमनसाहत का सबूत दिया दिया, तब तो दूसरे सप्ताह उसे 'बिल्ला' मिल गया। नहीं तो वह आनन्द करे। कइयों को रुपये के जोर से छठा भाग कैद बिताने पर ही नंबरदार बना दिया जाता है और कई कैद पूरी होते तक प्रार्थना ही करते रहते हैं। एक साहिब बड़े होशियार थे। आपने समझा कि दारोगा कुछ दाल में काला–काला कर जाता है। इसलिए आपने आज्ञा दी कि वह स्वयं दफ़्तर में बैठकर टिकटों का मुलाहिजा फ़रमा कर नंबरदारी दिया करेंगे। आप स्वयं जिसका दिल चाहता टिकट लेते और परेड के अंत में गिन कर सब टिकट दारोगा के हवाले कर देते। दारोगा उनके सामने ही अपनी अर्दली को कह देता "ये टिकट ले जाओ, साहिब की मेज पर रख दो।" दफ़्तर तक पहुँचते–पहुँचते बहुधा टिकट बदल जाते। धनवाले अन्दर हो जाते और धनहीन बाहर हो जाते। साहिब समझते, हम अपनी मर्जी से उनको नंबरदारी दे रहे हैं। असलीयत में मिलती उनको, जो दारोगा को चढ़ावा चढ़ा देते। नए सुपरिंटैंडैंट को तो देखते–देखते दारोगा अपना काम कर लेते हैं। एक रोज़ परेड में ही दारोगा ने अपने अर्दली को भेजा कि "कर्मू" से पूछो वह क्या देगा? कर्मू का हक था। वह समझता था, नंबरदारी तो यूं भी मिल ही जाएगी, फिर बहुत देने का क्या फ़ायदा? उसने दस रुपए का वायदा किया। दारोगा 18 माँगता था। इसलिए सौदा रह गया। जब साहिब कर्मू के पास गये, उसने अपने हक को खूब ज़ोर से माँगा। साहिब अब और भी होशियार हो चुके थे। इसलिए टिकट दफ़्तर में न ले जाते थे। जिसको नंबरदारी देनी होती, वहीं परेड में दे देते। आपने टिकट पकड़ लिया। दारोगा भी प्रत्युत्पन्न–मति था। समझा, शिकार गया। उसने झट से कहा–''कर्मू, तुम वही हो, जिसे मैंने कल जुआ खेलते पकड़ा था। नंबरदारी पीछे लेना, पहले पेशी भुगत लो।'' यह कह कर उसने टिकट साहिब के हाथ से ले लिया। अब साहिब क्या कर सकते थे? एक जुआरिये को तो नंबरदार नहीं बना सकते थे। टिकट छोड़ कर आगे चल दिए। साहिब चार कदम निकला तो दारोगा ने पूछा ''बोलो बच्चा, अब कहो?'' कैदी ने कहा ''अच्छा दारोगा जी, 15 ही सही।'' दारोगा ने साहिब के निकट पहुँच कर जोर से कहा, ''कर्मू, तुम्हारे बाप का नाम?'' कैदी ने कहा, ''कर्मू राजे दा।'' दारोगा ने अपनी डायरी निकाल कर जरा नज़र डाली और फिर हँसते हुए कहा–''ओ हो, यह तो मुफ़्त

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

मानव से ब्रह्म की खोज तक

(एक पथिक की यात्रा)

● **श्रीमती मनीषा विमल**

एक समाचार पत्र में एक लेख पढ़ा 'इन्सान की तलाश'। उसी की एक पंक्ति ने दिल छू लिया "आज के परिवेश में इन्सान तो इन्सान भी नहीं रहा भगवान को क्या पायेगा।" याद आई खलील जिब्रान का कथन "ईश्वर का पहला शब्द था मनुष्य और फरिश्ता।"

दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन का कहना था ''हमने पक्षियों की तरह उड़ना और मछलियों की तरह तैरना तो सीख लिया है किन्तु मनुष्य की तरह पृथिवी पर चलना और जीना नहीं सीखा।" आज के परिवेश में देखें तो यह कथन अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है। यह भी सत्य है कि जब मनुष्य में इन्सानियत ही नहीं होगी तो वह ईश्वर से साक्षात्कार कैसे कर पायेगा, महाभारत के एक कथानक से आज के मानव का सही रूप देखने को प्रत्यक्ष हो रहा है।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् जब पाण्डव राज्य करने लगे तब एक दिन योगेश्वर कृष्ण के साथ वार्तालाप करते हुये युधिष्ठिर ने पूछा। "श्री कृष्ण कलयुग में मनुष्य कैसा होगा?" मुस्कराते हुये श्री कृष्ण ने कहा – "तुम पाँचों भाई जरा पहले वन में जाओ और जो कुछ देखो मुझे आकर बताना।"

पाँचों भाई अलग–अलग दिशा में चले गये। वन में सबने अलग–अलग, अजीब–अजीब चीजें देखीं, युधिष्ठिर ने दो सूँड़ का हाथी देखा। अर्जुन ने एक पक्षी देखा जिसके पखों पर वेद की ऋचाएँ लिखी थीं किन्तु वह मांस खा रहा था। भीम ने देखा एक गाय अपने नवजात शिशु को चाट–चाट कर लहूलुहान कर रही है। नकुल ने देखा एक स्थान पर सात कुएँ हैं। जिनमें छः कुओं में गन्दगी भरी पड़ी है और एक कुएँ में साफ पानी है। सहदेव एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ उन्हें एक बड़ा मनोरम बाग दिखाई दिया किन्तु थोड़ी ही देर में एक बड़ी–सी चट्टान पहाड़ी से फिसलती हुई आ रही है और सुन्दर–सुन्दर पेड़ पौधों को नष्ट कर रही है किन्तु एक पौधे के स्पर्श से वह रुक गई। आश्चर्य हुआ।

सबको ऐसे अजूबे देखकर आश्चर्य हुआ, किन्तु किसी की समझ में कुछ नहीं आया। श्रीकृष्ण से इनका रहस्य, जानना चाहा। श्रीकृष्ण ने कहा – यह कलयुग में आने वाले मनुष्यों की एक झाँकी है। युधिष्ठिर अभी तुम राज्य कर लो फिर तो मनुष्य स्वार्थी, धनलोलुप, कामुक, अधर्मी और धैर्यहीन हो जायेगा, किसी को भी शासन चलाना बहुत कठिन हो जायेगा।

श्रीकृष्ण ने एक दृश्य का रहस्य बताना शुरू किया "युधिष्ठिर तुमने दो सूँड़ का हाथी देखा। इसका अर्थ है कलयुग में मनुष्य दोगले चरित्र का होगा, कहेगा कुछ, करेगा कुछ। बाहर आचरण सद्पुरुष का, धर्मात्मा और उदारता का होगा किन्तु कर्म व आचरण वेद विरुद्ध, धोखा देने वाला तथा झूठे वायदे करने वाला होगा।

यदि देखा जाये तो वास्तव में आजकल अधिकतर मानवों का चरित्र ऐसा ही दोगला है। धर्म के नाम पर ढोंग करके धन एकत्र कर विलासिता का जीवन जीना, राजनीति में एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण करके उसे नीचा दिखाना, अधिकतर अधार्मिक जीवन जीना उनका उद्देश्य होगा।

अर्जुन को दृश्य का रहस्य समझाते हुये बताया– कलयुग में साधु, सन्यासी, विद्वान, वेदज्ञ होंगे किन्तु वह धनलोभी, विलासी व कामुक हो जायेंगे, बड़ी–बड़ी सस्थाओं को कब्जाने, उनके मठाधीश बनकर अपनी इच्छायें पूरी करने में लगे रहेंगे, इसीलिए तुमने देखा कि पक्षी के पंखों पर वेद ऋचाएँ तो हैं किन्तु वह माँस खाने में लगा रहता है।

देखा जाय तो आजकल ढोंगी बाबा, धर्म–गुरु संस्थाओं के प्रमुख, सन्यासियों का चरित्र ऐसा ही है।

भीम द्वारा देखे गये दृश्य का रहस्य समझाते हुये श्रीकृष्ण ने बताया कि कलयुग में माता–पिता ही अपनी सन्तान के रक्षक के बजाय भक्षक बन जायेंगे, क्योंकि दोनों धन अर्जित करने के चक्कर में बच्चों का लालन–पालन क्रेच या आयाओं के भरोसे छोड़ देंगे। उन्हें अच्छे संस्कार व माता–पिता के लाड़–प्यार एवं डाट–फटकार का एहसास ही नहीं होगा, अत्यधिक धन के कारण वह केवल धन को ही सब कुछ मानने लगेंगे, बच्चों की उचित–अनुचित माँगे पूरी होती रहेगी, और बच्चे भी केवल धन को ही सब कुछ समझने लगेंगे, इसीलिये आज युवक कम उम्र से ही भाँति–भाँति के अपराधों में संलग्न हो रहा है। नकुल द्वारा बताये गये सात कुओं का रहस्य समझाया कि नकुल तुमने सात कुएँ देखे, छः गन्दगी से भरे और एक स्वच्छ पानी का। कलयुग में मनुष्य कामुकता, विलासिता, झूठ व मक्कारी, पद–लोलुप, धन–लोलुप तथा ईर्ष्या द्वेष जैसे दुर्गुणों से भरा होगा, किन्तु फिर भी कोई न कोई ऐसा सन्त या महापुरुष जन्म लेगा जो समाज को नई दिशा देगा, मनुष्यों को जीवन शैली का नया अर्थ समझायेगा।

सहदेव ने देखा एक सुन्दर उपवन को एक चट्टान आकर नष्ट कर रही है। कृष्ण ने बताया कि समाज में चट्टान की तरह आतंकवादी, भ्रष्टाचारी, अन्यायी देशद्रोही जैसे व्यक्ति सामाजिक जीवन में आतंक फैला कर नष्ट–भ्रष्ट करने का प्रयास करेंगे। उस समय भी कोई सच्चा देशभक्त, प्रभुभक्त, कर्मठ व चरित्रवान व्यक्ति आकर इन राक्षसों को सबक सिखायेंगे और देश की जनता को बचायेंगे। ऐसे व्यक्तिओं को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ेगा।

वेद मन्त्र भी कहता है–

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः। यजु. 40–3

जो व्यक्ति आत्मा के विपरीत आचरण करने वाले होते हैं वह जीते जी तो दुर्गति को प्राप्त होते ही हैं, मरकर भी उन योनियों को प्राप्त होते हैं जो घनीभूत अन्धकार से आच्छादित होती है।

यह सब सुनकर पाण्डवों ने कृष्ण से पूछा, तब कलयुग में ईश्वर को कैसे प्राया जायेगा? उत्तर में उन्होंने बताया कि जो व्यक्ति वेद द्वारा दी गई शिक्षा के अनुसार आचरण करेगा और कर्मफल के सिद्वान्त को अच्छी तरह समझ कर कार्य करेगा वही ईश्वर से साक्षात्कार कर सकेगा क्योंकि मनुष्य ईश्वर को जानना, समझना नहीं चाहता, अतः कष्ट पायेगा।

इसी सिद्धान्त को यजुर्वेद के सत्तरहवें अध्याय का इकत्तीसवाँ मन्त्र कहता है–

न तं विदांथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेपण प्रावृता जल्प्या
चासुतृपउक्थशासश्चरन्ति।। यजु. 17–31

"**न तं विदाथ** = तुम उसे नहीं जानते जिसने सब लोक लोकान्तरों को उत्पन्न किया है। वह **युष्माकम अन्तरम् भूव**" तुम्हारे अन्दर विराजमान है। उसको न जानने वाले–अज्ञान अन्धकार के कोहरे से घिरे हुये, जल्प्या–व्यर्थ के बाद–विवाद में पड़े हुये, **असुतृपः** = भोग विलास में रत अवैदिक कर्म करते हैं। **च उक्थशासः चरन्ति**– योगाभ्यास को छोड़कर विषय वासनाओं में लिप्त रहते, वह ईश्वर अर्थात् ब्रह्म को नहीं जान सकते।

इस मन्त्र को जानकर एक चिन्तनशील प्राणी को जिज्ञासा हुई इन्सान को और ब्रह्म को जानने की, और वह इस खोज में निकल पड़ा सीधे इतिहास के पन्नों में।

सर्वप्रथम वह यूनान के बादशाह के दरबार में पहुँचा यह सोच कर कि इतने बड़े सम्राट हैं इन्हें तो ब्रह्म और इन्सान की पहचान होगी। वह बोले मैं तो सम्राट हूँ मैं ब्रह्म को नहीं जानता, हाँ मेरे राज्य में रहने वाले दार्शनिक सुकरात अवश्य जानते होगें।

वह दार्शनिक के पास पहुँचा– उन्होंने कहा– मैं पहले ज्ञानी था, अब अज्ञानी हो गया हूँ क्योंकि धीर, बुद्धिमान योगी पुरुष कहते है– वह सबमें व्याप्त है किन्तु दिखाई नहीं देता, जो दिखाई देता है वह परमात्मा नहीं है।

जिज्ञासु को कुछ समझ नहीं आया। वह एक बगीचे में आकर बैठ गया, सुन्दर–सुन्दर फूलों को देख कर सोचा, यह विधाता की कैसी सृष्टी है इतनी सुन्दर कृति है। इन्हें तो मालूम होगा, ईश्वर के बारे में। फूलों के पास जाते ही फूल कुम्हलाने लगे। पथिक बोला जब भौंरें तुम्हारा रस चुसते हैं तब तो तुम नहीं मुर्झाते, न ही डरते हो। वह बोले–वह हमारा रस चूस कर दूर–दूर तक हमारी सुगन्धी फैलाते हैं। तुम मनुष्य हो, जो अपने स्वार्थ के लिए हमारी गर्दन मरोड़ कर फेंक देते हो, कभी नेताओं पर, कभी शवों पर और कभी सुरबालाओं को सजा कर।

फूलों ने एहसास कराया मानवता की स्वार्थपरता का। घूमते–घूमते वह श्मशान में पहुँच गया, वहाँ चितायें जल रही थीं, दो अर्थी रखी थी, एक बहुत सारे फूलों से ढकी और एक सादी। डोम से पूछा तो उसने बताया यहाँ तो सब राख हो जाता है, चाहे राजा हो या रंक, साधु हो या सेठ यह जो तुम फूलों से ढकी अर्थी देख रहे हो यह एक बहुत बड़े सेठ की है जिसने पूरी जिन्दगी गरीबों को सताया, अनर्गल तरीके से धन इकट्ठा किया किन्तु अब खाली हाथ है और यह भी राख हो जायेगा।

पथिक सोचने लगा इन्सानियत की हत्या करके इसके हाथ क्या आया। आगे चला एक फ़कीर बहुत सारी खोपड़ी रखे मोमबत्ती जलायें बैठा था– पथिक ने पूछा ये क्या है? आप कौन हैं? क्या आप इन्सान को और ब्रह्म को जानते हैं। वह महान दार्शनिक कन्फयूशस थे, बोले– मैं भी यही जानने का प्रयास कर रहा हूँ उन्होंने कहा–**असुतृपः च उक्थशसः चरन्ति**– जो अपने प्राण पोषण में रत, विषय भोगों में लिप्त, अवैदिक कर्म करते हैं और जो वेदमार्ग पर चलते है सबका अन्त एक–सा है। उस ब्रह्म से किसको कैसी सजा मिली पता नहीं। अन्त तो सबका एक–सा है। मैं भी उस इन्सानी जिन्दगी को, और ईश्वर की व्यवस्था को नहीं समझ सका।

थोड़ा आगे बढ़ा तो उस पथिक का सामना प्रसिद्ध शायर फिराक गोरखपुरी से हो गया। उनसे पूछा– तो बोले– मैं तो जिन्दगी के साथ इतनी दूर तक आ गया हूँ किन्तु मुझे भी ईश्वर नहीं मिला और न ही कोई सच्चा इन्सान। दोनों घूमते–घूमते दिल्ली के लालकिले पर आ गये आज यहाँ उत्सव था पन्द्रह अगस्त का। किले पर झन्डा फहराया जा चुका था। आज़ादी में शहीद होने वालें की गाथाएँ गाई जा रही थी, किन्तु दूसरी ओर लालकिले में की गई अत्याचारी राजाओं की हैवानियत की कहानी भी। जहाँ नादिरशाह ने खून की होली खेली, औरंगजेब ने अपने पिता को किले में कैद किया, यातनाएँ दीं। वहीं जहानौरा के बलिदान की गाथा भी। जिसने अपने पिता की सेवा के लिये अपने को कैदी बना दिया। बोध हुआ इन्सानियत का भी और हैवानियत का भी।

थक हार कर पथिक हर सिंगार के वृक्ष की छाँव में बैठ गया और आँख बन्द कर ली। ऊपर से फूल गिरे, आभास हुआ अन्तर्मन का, अन्दर से एक आवाज़ सुनाई दी, अरे पगले तू क्यों भटक रहा है–

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

सुदीति पुरुमीड्हा

● शिव नारायण उपाध्याय

सुदीति पुरुमीड्हो ऋग्वेद मण्डल 8 के सूक्त संख्या 71 तथा सामवेद पूर्वार्जिक अध्याय 1 प्रथम दशति मंत्र संख्या 6 की दृष्टि है। ऋग्वेद मण्डल 1 सूक्त 71 में पन्द्रह ऋचाएँ हैं जिनमें अग्नि स्वरूप परमात्मा की स्तुति की गई है। अब हम वेद में से कुछ ऋचाएँ रख रहे हैं।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य।। ऋ.8.71.1.

पदार्थ – (**अग्ने**) हे अग्नि स्वरूप परमात्मा। (**त्वम्**) तू (**महोभिः**) स्वकीया महती शक्तियों द्वारा (**विश्वस्याः**) समस्त (**अराते**) शत्रुता, दीनता और मानसिक मलीनता आदि से (**नः**) हमको (**पाहि**) बचा (**उत**) और (**मर्त्यस्य**) मनुष्य के द्वेष, ईर्ष्या आदि से भी हमारी रक्षा कर।

नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात। त्वमिदसि क्षपावान्।। ऋ.8.71.2.

पदार्थ–(**प्रियजात**) हे सब प्राणियों के प्रिय परमात्मन् (**वः**) तेरे ऊपर (**पौरुषेयः मन्युः**) मनुष्य सम्बन्धी क्रोध (**नाहि, ईशे**) अपना प्रभाव नहीं डाल सकता क्योंकि (**त्वम् इत्**) तू ही (**क्षपावान् असि**) पृथ्वीश्वर है। अगले मंत्र में परमात्मा से धन की याचना की गई है।

से नो विश्वेभिर्देवेभिरूर्जो नयादभद्रशोचे। रयिं देहि विश्ववारम्।। ऋ.8.73.3.

पदार्थ–(**उर्जोनपात्**) हे बलप्रद।(**भद्रशोचे**) हे कल्याणकारी तेजस्वी परमात्मा। (**सः**) आप (**विश्वेभिःदेवेभिः**) समस्त दिव्य पदार्थों के साथ (**नः**) हमको (**विश्ववारम्**) सर्व वरणीय (**रयिम्**) धन को (**देहि**) दीजिए। अगले मंत्र में बताया गया है कि परमात्मा जिसको धन–सम्पत्ति देता है उसे कोई दूसरा उससे नहीं छीन सकता है।

न तमग्ने अरातयो मर्त युवन्त रायः। यं त्रायसे दाश्वांसम्।। ऋ. 8.71.4.

पदार्थ – हे अग्ने तू (**यम् दाश्वांसम्**) जिस दाता और उदार पुरुष की (**त्रायसे**) सहायता और रक्षा करता है (**तम् मर्तम्**) उस मरणशील पुरुष को (**अरातयः**) शत्रु (**रायः**) सम्पत्ति से (**न युवन्त**) कोई भी पृथक् नहीं कर सकता है। अगले मंत्र में कहा गया है कि कोई देवयज्ञ करता है उसको सब प्रकार का धन ईश कृपा से प्राप्त हो जाता है। अगले मंत्र में परमानन्द की प्राप्ति के लिए कहा गया है–

त्वं रयिं पुरुवीरमग्ने दाशुषे मर्ताय। प्र णो नय वस्यो अच्छ।। ऋ. 8.71.6.

पदार्थ – (**अग्ने**) हे सर्वाधार परमात्मा। (**त्वम**) तू (दाशुषे मर्ताय) परोपकारी मनुष्य को (**पुरुवीरम् रयिम्**) वीरों से संयुक्त धन देता है। हे ईश (**नः**) हमको (**वस्यः**) परमानन्द की (**अच्छ**) ओर (**प्र नय**) ले चल। अगले मंत्र में कहा गया है कि मनुष्य को अपने ही समाज के लिए अशुभ करने में नहीं लगा रहना चाहिए। इससे अपनी ही हानि होगी। इससे अगले मंत्र में ईश्वर द्वारा दिए जा रहे दान का वर्णन है।

अग्ने माकिष्टे देवस्य रातिमदेवो युयोत। त्वमीशिषे वसूनाम्।। ऋ. 8.71.8.

पदार्थ – (**अग्ने**) हे तेजस्वी परमात्मन्। (**ते देवस्य रतिम्**) तुम देव के दान को (**अदेवः**) महा महा दुष्ट पुरुष (**माकिः युयोत**) नष्ट न कर दे क्योंकि (**त्वम् वसुनाम् ईशिषे**) तू ही सब साधनों का अधीश्वर और शासक है। फिर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

स नो वस्व उप मास्यूर्जो नपान्माहिनस्य। सखे वसो जरितृभ्यः।। ऋ. 8.71.9.

पदार्थ – (**ऊर्जः**) हे शक्तियों के (**नपात्**) प्रदाता (**सखे**) हे सबके हितकारी (**वसो**) वास देने वाले जगदीश (**सः**) वह तू (**नः जरितृभ्यः**) हम स्तुति करने वालों को (**वस्वः**) प्रशंसनीय सम्पत्ति और (**माहिनस्य**) महत्त्व दोनों देता है। अगली ऋचा में बताया गया है कि हमारे पास जो कुछ भी है वह सब ईश्वर के लिए ही है। परमात्मा हमें अपने कर्मानुसार फल दे रहा है फिर भी हमें नित्य उसकी प्रार्थना करनी चाहिए।

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्। द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि।। ऋ. 8.71.11.

पदार्थ – (**सहसः**) इस जगत् के (**सूनुम्**) उत्पादक (**जातवेदसम्**) सर्वज्ञ (**अग्निम्**) और सर्वाधार ईश्वर को हमारी प्रार्थना जाय। जिससे कि (**वार्याणाम् दानाय**) उत्तमोत्तम सुखप्रद सम्पत्तियों का दान हमें प्राप्त होवे और (**यः**) जो (**द्विता**) दो प्रकार का भासित होता है सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि देवों में वह (**अमृतः**) अमृत रूप होकर वह व्याप्त है (**मर्त्येषु आ**) और मनुष्यों में (**होता**) दान दाता और (**विशि**) गृह गृह में (**मन्द्रत्तमः**) अतिशय आनन्द प्रद हो रहा है।

अगली ऋचा में कहा गया है कि सब वस्तुओं की प्राप्ति के लिए हमें परमपिता परमेश्वर से ही प्रार्थना करनी चाहिए।

अब हम इस सूक्त के अन्तिम मंत्र पर विचार करते हैं।

अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्यग्निं शं योश्च दातवे। विश्वासु विक्ष्ववितेव हव्यो भुवद्वस्तुर्ऋषूणाम्।। ऋ. 8.71.15.

पदार्थ – हम उपास्यगण (**नः**) अपने (**द्वेषः**) द्वेषियों को (**योतवे**) दूर करने के लिए (**अग्निम्**) परमात्मा से (**गुणीमसि**) प्रार्थना करते हैं और (**शम् योः च**) सुख के मिश्रण को (**दातवे**) देने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। जो परमात्मा (**विश्वासु**) समस्त (**विक्षु**) प्रजाओं में (**अविता, इव**) रक्षक रूप से स्थित है और जो (**ऋषुणाम्**) ऋषियों का (**हव्यः**) स्तुत्य है और (**वस्तुः**) वास देने वाला (**भुवत्**) है।

सुदीति अपने पिता पुरमीड के समान ही वेदों की पारंगत विदुषी महिला है। इसके कार्यों के कण्व वंश को यश प्राप्त हुआ है। सुदीति ने सामवेद के एक मंत्र पर भी कार्य किया है उसे भी देख लेते हैं।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य।। सामवेद मंत्र संख्या 6. यह मंत्र ऋ. 8.71.1. में भी आ गया है और वहाँ इसका अर्थ हो चुका है। इति।

73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान) 324009

☞ पृष्ठ 07 का शेष

मानव से ब्रह्म...

युष्माकम् अन्तरम् बभूव– मैं तो तेरे अन्दर ही हूँ। फूलों की सुगन्ध में, दीनों की पुकार में, दुःखियों की सेवा में, निस्काम, निःस्वार्थ कर्म में हूँ। स्वार्थ रहित साधना में। मेरा कोई रूप नहीं, आकार नहीं, रंग नहीं, मैं तो तेरे विश्वास, तेरे अहसास, तेरी श्रद्धा, तेरे पुरुषार्थ में हूँ। पथिक बोला जब तू सबके अन्दर है तो मनुष्य इतना क्रूर क्यों हो जाता है। इतना स्वार्थी, धन का लोभी, अहंकारी क्यों हो जाता है? पुनः एक आवाज़ आई– मैंने मनुष्य बनाया उसे बुद्धि दी, विवेक दिया, कर्म करने की शक्ति व स्वतन्त्रता दी है किन्तु फल पाने की स्वतन्त्रता नहीं दी, यदि मेरी दी हुई स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करता है तो मुझे नहीं पा सकता। जिन्होंने भी इस कर्मफल के सिद्धान्त को समझ लिया उन्होंने मुझे पा लिया। वह शुद्ध आत्मा, निस्वार्थ कर्म योगी बन गये।

पुनः इतिहास उठा कर देख, शुद्ध आत्मा व योगी बनकर मूलशंकर से दयानन्द बन गये मानवता की प्रतिमूर्ति, सिदार्थ से गौतम बुद्ध–तथागत बन गये, धर्म का रास्ता बताने वाले। मदर टेरेसा– दुखियों की पुकार सुन दीनों की सेवा करने वाली। देश पर मर–मिटने वाले शहीद – भगतसिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आदि। मुंशीराम से श्रद्धानन्द कर्त्तव्य पथ को बताने वाले। कबीर, दादू, रैदास, तुलसी और भी बहुत से महापुरुष जो पढ़े–लिखे ज्ञानी नहीं थे किन्तु उन्होंने इन्सानियत को जाना, समझा और निःस्वार्थ कर्म किया, फिर भी अहंकार नहीं किया। अपना सर्वस्वा होम कर दिया। उन्होंने कर्म सिद्धान्त को समझा किन्तु अहंकार नही किया। ऐसे ही व्यक्ति ब्रह्म का साक्षात्कार कर पाते हैं।

जिज्ञासु पथिक की खोज समाप्त हुई और वह भी निकल पड़ा सच्चा मानव बनने के लिये, ग्राम सेवा, मानव सेवा, देश सेवा निष्काम भाव से करने के लिए। **नीहारेण प्रावृत्ताः** अज्ञान अन्धकार से आच्छादित कुहरे से निकल कर उस ब्रह्म से साक्षात्कार करने के लिए, राह में बाधा आती है। मन्त्र कहता है–इन्सान बनने के लिये, जल्पी होने अर्थात् मिथ्या वाद–विवाद में फँस कर दूसरों पर दोषारोपण कर अपनी मानसिक शान्ति भंग कर दूसरों की शान्ति भी भंग करना बहुत बड़ी बाधा है। मनुष्य को वर्तमान में रह, भविष्य में होने वाली घटनाओं से चिंतित होने या भूत में घटी घटनाओं से व्यथित न होकर वर्तमान में ही कर्तव्य कर्म करने चाहिये। निष्काम कर्म, योग, साधना व दीन–दुखियों की सेवा करना, दूसरों के मन को व्यथित न करना ही सच्चे मानव की पहचान है। इसी से ईश्वर की प्राप्ति भी होती है किन्तु कर्म करने पर अहंकार नहीं करना। फल की इच्छा न रखना ही मानवता है और ब्रह्म को जानना है।

2/25 आर्यवानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार
मो. 9760618162

डॉ. भवानी लाल भारतीय के निधन पर प्राप्त हुए शोक सन्देश

यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. भवानीलाल जी भारतीय का देहान्त हो गया है। आर्य समाज श्री गंगानगर के सभी सदस्य एवं पदाधिकारी की इस बेला में शोक सतंप्त परिवार के प्रति शोक संवेदना प्रकट करते हैं।

ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगंत आत्मा को शान्ति एवं सद्‌गति प्रदान करे तथा शोक कुल परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति व समर्थ्य प्रदान करें। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति!!

आर्य समाज श्री गंगानगर

डॉ. भवानीलाल जी भारतीय के निधन से आर्यजगत् ने एक महान् लेखक व शोधकर्त्ता को खो दिया है। दशकों की साहित्य साधना व वैदिक धर्म का प्रचार कार्य उनकी वैदिक धर्म महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रति अटूट श्रद्धा व तड़प को बताता है। वे अपना बड़ा यश संसार में छोड़ गये हैं। उनके विचार सदियों तक नई पीढ़ी को प्रेरणा देते रहेंगे। शोधकर्त्ता उनके साहित्य से शोध में सहायता लेते रहेंगे।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात के समस्त न्यासी व साधक–साधिकाएँ आश्रम व गुरुकुल वासी उनके निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं। उनके परिजनों के प्रति सबकी सम्वेदनाएँ हैं। परिवार इस वियोग से अपने को शीघ्र ही शान्त कर पायेगा। डॉ. भारतीय जी की यश:कीर्ति उनमें सदैव गौरव व सम्मान को देती रहेगी। परिवार ने उनकी बहुत सेवा की। परिजनों को आदर अभिवादन।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ गुजरात

☞ पृष्ठ 03 का शेष

बोध कथाएँ...

मिश्री की पुड़िया निकालकर बोले– "मेरे पास यह विष की पुड़िया है। कोई भी व्यक्ति इसे दूध में घोलकर पी ले तो वह मर जायेगा और यह व्यक्ति जीवित हो जायेगा।"

अब सब लोग एक–दूसरे का मुँह देखने लगे। महात्मा ने कहा– "माँ! ओ इस युवक की माँ! तू जो अभी कह रही थी कि तेरे स्थान पर प्राण निकल जायँ, मैं मर जाऊँ पुत्र, तू ज़िन्दा रह। यह पुड़िया तू ही दूध में डालकर पी ले।"

माँ ने कहा– "मैं मर तो जाऊँ। मेरा एक ही पुत्र है, इसके लिए नहीं मरूँगी तो किसके लिए मरूँगी? परन्तु पहले मेरी जन्म–पत्री मँगवाकर देख लो। यदि मेरे भाग्य में और सन्तान उत्पन्न होना लिखा है तो फिर मैं काहे को मरूँ!"

महात्मा ने युवक के पिता की ओर देखकर कहा – "लाला जी! यह माँ तो नहीं पीती, आप ही इस विष को पी लीजिये। आप जो इतना रोते–पीटते हैं, अपने बेटे से भी आपको प्यार है, इसके वियोग में दुःखी हुए जाते हैं, तो लो, पीयो यह विष! तुम्हारा पुत्र अभी जीवित हो जायेगा।"

लाला जी बोले – "पी तो लूँ परन्तु मेरा व्यापार बहुत फैल गया है। इसे सँभालनेवाला कोई नहीं है, इसीलिए विष नहीं पी सकता।"

महात्मा जी युवक की पत्नी को सम्बोधित करके बोले– "अच्छा देवी! ये दोनों नहीं पीते, तू ही यह विष पी ले।"

पत्नी ने हाथ जोड़कर कहा– "मैं पीने को तैयार हूँ महाराज! परन्तु मेरी कोख में तो मरनेवाले का चिन्ह है। मेरे साथ यदि आप उसे भी मारना चाहते हैं तो लाइये, मैं विषपान कर लेती हूँ, परन्तु इसका निर्णय आप ही कीजिये कि मुझे ऐसा करना चाहिये या नहीं।"

महात्मा बोले– "नहीं, तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए। परन्तु जब कोई भी इस विष को पीने के लिए तैयार नहीं, तो फिर यह जियेगा कैसे? अच्छा, दूध तो लाओ। मैं सोचता हूँ कौन पीयेगा।"

जब वे इस प्रकार बातें कर रहे थे तो मुहल्लेवाले एक–एक करके खिसक रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति डर रहा था कि मेरी बारी न आ जाय।

दूध आया। महात्मा ने मिश्री की पुड़िया उसमें घोल दी। लोगों की ओर देखा। कितने ही लोग उठकर चले गये। भीड़ बहुत छँट गई। महात्मा बोले– "जब कोई नहीं पीता तो शायद मुझे ही यह पीना पड़ेगा।"

एक–साथ कितने ही लोगों ने कहा – "हाँ–हाँ, महाराज! आप पी लो, आप ही पी लो।"

युवक की माँ ने कहा – "आप तो महात्मा हैं, साधु है। आप ही पियो!"

युवक के पिता ने कहा– "साधु–सन्तों का तो जीवन ही दूसरों के लिए होता है महात्मा जी! आप ही कृपा करो।"

अर्थात् आप ही मरो, हमें मरने का अवकाश नहीं। साधु के कहने पर किसी ने विष नहीं पिया तो महात्मा ने स्वयं ही विष पी लिया। उसमें विष तो था ही नहीं। थी केवल मिश्री। महात्मा को कुछ हुआ नहीं। युवक अपने प्राणों को ब्रह्माण्ड में पहुँचाकर लाश की भाँति पड़ा था, सो प्राणों को नीचे उतारकर उठ बैठा।

गुरु ने कहा – "क्यों युवक! देखा तूने, ये सब लोग तुझे कितना प्यार करते हैं? तेरे लिए कितने प्राण देते हैं?"

युवक ने कहा – "हाँ गुरुदेव! देख लिया सब–कुछ। मेरी आँखें बन्द थीं, परन्तु मेरे कान प्रत्येक बात सुन रहे थे। पहले तरस आया इन लोगों पर कि मैं इन्हें धोखा देता हूँ। इनका रोना सुनकर, इनकी चीख़ें सुनकर जी में आया कि उठ बैठूँ कि मैं मरा नहीं, परन्तु मन को दृढ़ करके मैं लेटा रहा। जब माँ ने कहा, पिता ने कहा, पत्नी ने कहा कि वे सब मेरे लिए जान देना चाहते हैं, स्वयं मरने को तैयार हैं कि मैं जी उठूँ, तो मैं समझा कि आप जो कहते थे, वह ग़लत था। परन्तु अब समझा हूँ गुरुदेव, कि इनमें से कोई भी मुझे प्यार नहीं करता। ये अपने लिए रो रहे थे; अपने लिए चीख़ रहे थे। मेरे लिए कोई भी मरने को तैयार नहीं हुआ। ये सब स्वार्थ के साथी हैं। मेरा साथी केवल वह है, जिसे मैं इनके लिए भुला बैठा था।"

यह है इस मोह की वास्तविकता, जिसके वश में होकर यह संसार उलटे मार्ग पर बढ़ा जाता है। प्रत्येक स्थान पर स्वार्थ, प्रत्येक स्वार्थ पर भौतिकता, मायावाद, सर्वत्र इस शरीर की चिन्ता अथवा उन लोगों की चिन्ता, जिनका सम्बन्ध इस शरीर से है।

इति

☞ पृष्ठ 06 का शेष

मुझे रहम की ...

में गरीब मार हो चली थी। वह जुआरिया तो कर्मू मीर का है और तुम हो राजे के। अच्छा साहिब से अर्ज कर ले।'' साहिब भी मुस्कराया–आखिर दारोगा की ही गलती थी। कैदी ने शुक्र किया, आखिर बिगड़ा हुआ खेल फिर बन गया, 5 रुपये की क्या बात है? दारोगा ने अपने दिल में कहा–''यह साहिब अपने आपको समझता ही कहाँ है? मेरे लिए तो यह बच्चा है। अगर मैं इनसे भी रह गया, तो मुझसे कौन कहेगा?'' क्या अद्भुत खेल था, सब अपनी–अपनी जगह पर प्रसन्न थे। यदि जेल के सब ढंगों को वर्णन करना हो, तो एक विषय के लिए एक पुस्तक की आवश्यकता होगी। इसलिए मैं तो चावलों का एक दाना ही अपने पाठकों के स्वाध्यार्थ उनको दर्शाता हूँ।

जेल की नंबरदारी गौओं की नंबरदारी की माफ़िक केवल एक पूछ ही नहीं होती। जहाँ एक कैदी को महीने में तीन दिन रिहाई मिलती है और वह छह मास में एक पत्र लिख सकता है और छह मास में एक बार ही अपने सम्बन्धियों को मिल सकता है, वहाँ एक कैदी बार्डर को महीने में आठ दिन रिहाई मिलती है और वह एक मास में एक पत्र भेज सकता है और एक मुलाकात कर सकता है। इन फ़ायदों को उठाने के लिए हर एक कैदी नंबरदार बनना चाहता है। इलावा इसके नंबरदार काम और चलने–फिरने की रोकटोक से बरी हो जाता है। जिन दिनों मैंने रहम की दरख़ास्त भेजने से इंकार किया, जिसके थोड़ी देर बाद ही सर माइकल ने पोलिटिकल कैदियों की तरक्की का सिलसिला बंद कर दिया। जहाँ तक मुझे मालूम है, उन दिनों जो पोलिटिकल कैदी नंबरदार थे, उन्होंने किसी तरह भी अपनी स्वतंत्रता का नाजायज़ इस्तेमाल नहीं किया। यदि किसी ने किया भी हो तो भी एक आदमी के लिए किसी जमात को सज़ा देना दे कौन सी अकलमंदी है? ऐसा प्रतीत होता है सर माइकल की आँखों में देहली अभियोग के सब आदमी चुभ रहे थे। मुझे किसी विश्वसनीय पुरुष ने बतलाया है–मगर मैं इसकी सत्यता का जिम्मेदार नहीं हो सकता कि सर माइकल मेरे विरुद्ध भी अपील करना चाहते थे, परंतु मिस्टर ऑलस्टन की सलाह पर आपको अपनी इच्छा बदलनी पड़ी। यदि यह बात सत्य है, तो आपने 'दया–प्रार्थना' के लिए मुझे क्यों कहलवा भेजा? मुझे समझ में नहीं आता। जेल के साहिब तो मुझ पर इतने कुपित थे कि मैंने उनसे नंबरदारी के लिए कहना ही फ़िज़ूल समझा। एक समय जेल में मेरे बिना कुर्सियाँ बुनना कोई न जानता था। दो–चार जरूरी कुर्सियाँ आ जाने पर मैं अपने नियत काम के आलावा यह काम भी करता रहा। एक महीने के बाद डिप्टी जेलर ने मुझे फ़ालतू दिन मिलने के लिए सिफारिश की और सिफारिशियों के साथ मैं भी खड़ा हो गया। हर एक को साहिब ने दो दिन दिए, मेरे टिकट पर भी आपने दो दिन इनाम लिख दिया। परंतु जब मैं वापिस जाने लगा, तो आपने मुझे पहचान लिया और पूछा, ''क्या आप यही बलराज है?'' दारोगा से 'हाँ का उत्तर पाने पर आपने मेरे ईनाम के दिन काट डाले। मैंने जब इसका कारण पूछा तो आप ने कहा, ''तुम देहली बमवाले हो।'' इसका इनाम से क्या सम्बन्ध है? जब मैंने फ़ालतू काम किया है तो मेरा हक है कि मुझे भी दूसरों की तरह दो दिन मिले–मैंने उत्तर दिया। ''शुक्र करो'' साहिब ने कहा–''तुमको सख्त काम पर नहीं लगाया गया। क्या यह थोड़ी मेहरबानी है? दिन नहीं मिल सकते।''

ऐसे मेहरबान साहिब से नंबरदारी माँगने का क्या फ़ायदा हो सकता था? इसलिए मैंने इन्स्पेक्टर–जनरल के दौरे का इंतजार किया। लाहौर के पुराने सुपरिंटेंडेंट वार्ड साहिब आजकल आई.जी. का काम करते थे। आपकी स्मरणशक्ति बहुत तेज़ है। आपने दौरा करते–करते मुझे पहचान लिया और मेरी बातों में दिलचस्पी लेते रहे। मैंने भी नंबरदारी के लिए प्रार्थना कर दी। आपने उत्तर दिया, ''अच्छा, मैं इस बात पर विचार करूँगा।'' आप तो चले गए, पर आपके विचार का क्या परिणाम निकला, यह जानने के लिए मुझे एक वर्ष और इंतजार करनी पड़ी। क्या ही अच्छा सिलसिला है? भला किसी काम में क्या ही कितनी देरी हो सकती है? दूसरे वर्ष मैंने सबसे पहले आपके विचारों का परिणाम पूछा। आपने जो उत्तर मुझे दिया, वह सर माइकल की तबीयत पर बड़ी रोशनी डालता है। आपने कहा, ''बलराज, मैं तुमसे साफ़–साफ़ बात करना पसंद करता हूँ। इसलिए बिना किसी हिचकिचाहट के मैं तुम को बतला देना चाहता हूँ। मेरे पास एक नीम सरकारी चिट्ठी है, जो मुझे तुम्हें और तुम्हारे जैसे आदमियों को नंबरदारी देने से रोकती है। मुझे शोक है, मैं इसके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।''

''यदि एक क्षण के लिए मान भी लिया जाय कि मैं निरपराध नहीं हूँ।'' मैंने उत्तर दिया, ''तो भी क्या तुम्हारी तहज़ीब तुम्हें अपने कैदियों से बदला लेना सिखलाती है अथवा उनको सुधारना? तुम्हारा ऐसा बदले से भरा हुआ बर्ताव कैसे एक पोलिटिकल कैदी को तुम्हारी तहज़ीब से राजी कर सकती है।''

इसके उत्तर में आपने जो सलूक मेरे साथ किया, वह अत्यंत सराहनीय था। आपने साहिब को हर प्रकार से मेरी सहायता करने के लिए कह दिया। साहिब ने भी ये शब्द सुनते ही अपनी करवट बदल ली और उस दिन के बाद मुझे हर महीने विशेष रिहाई देता रहा।

अब तो साफ़ ही हो गया कि मेरे पास दया–दृष्टि करने वाला कौन था। ऐसा प्रतीत होता है, सर माइकल यह बात न सह सका कि उससे वर्षाई हुई दया को कोई तिरस्कार करे। यहाँ भी मेरी समझ में रहम के लिए प्रार्थना न करने में उसका कोई तिरस्कार न था। यदि सचमुच उसके अंदर दया का भाव मौजूद था, तो वह बिन माँगे दया–दान कर सकता था। मेरी समझ में किसी को छोटा समझ कर उसको अपना बल दर्शाने के लिए उस पर दया कर देना आसान है, परंतु दूसरे को बिना नीचा दिखाये और बिना अपना प्रभाव डाले दया तो क्या, न्याय करना भी मुश्किल है। क्या हुआ यदि सर माइकल नौकरशाही का नेता था, तो भी सम्पूर्ण मनुष्य बनने के लिए उसे बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता थी।

देहली–बम–रहस्योद्घाटन से साभार

पत्र/कविता

माता-पिता व पितरों की सेवा से सन्तानों द्वारा उनका ऋण चुकता होता है

श्राद्ध पक्ष में हम पक्षियों को भोजन कराते हुए सोचते हैं कि शायद इन पक्षियों में से कोई हमारा पूर्वजन्म में पितर, माता–पिता–दादी–दादा–परदादी–परदादा रहा हो सकता है। यह कल्पना मात्र है वास्तविकता नहीं। हमें परमात्मा को याद करना चाहिए। उसका आभार एवं उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिये। पंच महायज्ञ, सन्ध्या देवयज्ञ, पितृ यज्ञ करने चाहिए। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र करने से यज्ञ सामग्री सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में सभी दिशाओं में फैल जाती है। उससे वायु की सभी प्रकार की अशुद्धियों के दूर होने से मनुष्य एवं अन्य सभी प्राणियों को लाभ होता है।

माता–पिता की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। माता–पिता का हम पर ऋण है जिसको हमें अपने इस जन्म में चुकाना है। हम उनकी सेवा करके उन पर कोई अहसान नहीं करते अपितु उन्होंने हमें जन्म देकर व उनके बाद हमारा जो पालन पोषण व शिक्षा की व्यवस्था की है, उसके ऋण को ही चुकाने का प्रयत्न करते हैं। माता–पिता की सेवा करने से पुण्य तो नहीं होता परन्तु सेवा न करने से पाप अवश्य होता है क्योंकि हमने उनके ऋण को नहीं चुकाते है। कुछ लोग दूसरों को प्रायः यह कहते हैं कि माता–पिता हमारे साथ रहते हैं। कहना चाहिए कि हमारा सौभाग्य है कि हमारे साथ रहकर हमें सेवा का अवसर देते हैं और हमें निरन्तर उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। एक प्रश्न है कि क्या ब्राह्मणों को भोजन कराने से हमारे मृत माता–पिता व उनके पूर्व के पितरों को भोजन पहुँचता है? ब्राह्मणों को भोजन कराने से वह भोजन हमारे माता–पिता व पितरों को पहुँचना असम्भव है। मृत पितरों को भोजन कराने व पहुँचाने की आवश्यकता भी नहीं है।

आचार्य विद्यापति शास्त्री
आर्य समाज धामावाला, देहरादून

****

प्रभु जी आएंगे

हम अन्दर कर लें साफ, फिर प्रभु जी आएँगे।
जब आएँगे मन को अति भाएँगे, प्रभु के दर्शन हम पाएँगे।।
इस अन्तःकरण के अन्दर, सुन्दर प्रभु का है यह मन्दिर।
जब मन्दिर हो जाए पूरा साफ, प्रभु आसन वहीं लगाएँगे।।
साधना की झाड़ू हाथ में लेकर, नित झाड़िए सवेरे उठकर।
सारा कूड़ा हो जाएगा साफ, फिर प्रभु जी झलक दिखाएँगे।।
फूल श्रद्धा के नित लाकर, मन मन्दिर को खूब सजा कर।
कर लो भक्तिभाव से सच्चा जाप, प्रभु दर्शन देकर जाएँगे।।
आओ ज्ञान की ज्योति जगा लें, प्रभु में हम ध्यान लगा लें।
फिर जागेंगे भाग्य हमारे, प्रभु जी अपने पास बिठाएँगे।।
यह भक्त प्रभु को अर्ज सुनावे, मन पूरा जब साफ हो जावे।
सब दूर हो जाएँगे सन्ताप, परम पिता नज़र फिर आएँगे।।

वेदप्रकाश शास्त्री
4–ई, कैलाश नगर, फाजिलका (पंजाब) – 152123
मो. 9463428299

वेद श्रावणी उपाकर्म (सलोना) का महत्त्व

वेद श्रावणी उपाकर्म है, पर्व सुपावन सुखकारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जग के नर–नारी।।
श्रावण मास पूर्णिमा को यह, पर्व मनाया जाता है।
इसे सलोना भी कहते हैं, ब्राह्मण पर्व कहाता है।।
आर्यों का यह विमल पर्व– रक्षाबंधन कहलाता है।
वेद श्रावणी उपाकर्म को, सारा जगत मनाता है।।
अच्छी तरह मनाओ इसको, सुख पाओगे तुम भारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जग के नर–नारी।।
ऋषियों–मुनियों विद्वानों ने, इसको श्रेष्ठ बताया है।
वेद पढ़ो, औरों को पढ़ाओ, दुनियाँ को समझाया है।।
बनो तपस्वी वेदाचारी, त्याग मार्ग दर्शाया है।
वैदिक कवी गायकों ने भी इसका ही गुणगाया है।।
आर्यवर्त्त के गुण गाती थी, किसी समय जगती सारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जगके नर–नारी।।
अविद्या रूपी अंधकार ने, भूमण्डल को घेरा है।
ढोंगी पाखंडी गुण्डों ने, आकर डाला डेरा है।।
गुरुड़म बढ़ा रहे हैं, ठगियाओं का यहाँ बसेरा है।
धर्म द्रोही पाँगा–पंथी लगा रहे नित फेरा है।।
खाओ–पीओ, मौज़ उड़ाओ, कहते हैं भ्रष्टाचारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जग के नर–नारी।।
बहिनें भी अब भ्राताओं को, देखो, राखी बाँध रहीं।
बदले में धन माँग रही हैं, पगली, मौका साध रहीं।।
भारत की ललनाओं! जागो, तुम भी, लालच त्यागो री।
धर्म की रक्षा करने का व्रत, भ्राताओं से मांगोरी।।
कौशल्या सीता जैसी तुम, बन जाओ अब महतारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जग के नर–नारी।।
जागो पूज्य ब्राह्मणों जागो, निजि कर्त्तव्य निभाओ तुम।
गौतम कपिल कनाद बनो तुम, त्याग भाव दर्शाओ तुम।।
करो वेद प्रचार जगत् में, सोया जगत जगाओ तुम।
जगत् गुरु दयानन्द बनो तुम, जग में धूम मचाओ तुम।।
नन्दलाल निर्भय बन जाओ, परसुराम सम तप धारी।
महापर्व का महत्त्व समझलो, जागो, जग के नर–नारी।।

पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845664

जीने की रीत

यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात भ्रमण करते हुए एक नगर में पहुँचे। वहाँ उनकी भेंट एक वृद्ध व्यक्ति से हुई। दोनों आपस में काफी घुल–मिल गये। उन्होंने आपस में खुलकर बातचीत की। सुकरात ने पूछा "आपकी वृद्धावस्था कैसी गुज़र रही है।" वृद्ध मुस्करा कर बोला। मैं अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व अपने समर्थ पुत्रों को देकर निश्चिंत हूँ। वे जो कहते हैं, कर देता हूँ, जो खिलाते हैं खा लेता हूँ और अपने पौत्र–पौत्रियों के साथ हँसता खेलता रहता हूँ। मैं उनके किसी काम में बाधक नहीं बनता। जब कभी वे परामर्श लेने आते हैं, मैं अपने जीवन के अनुभवों को उनके सामने रख देता हूँ। वे मेरी सलाह पर कितना चलते हैं यह देखना मेरा काम नहीं है। मेरा आग्रह कभी नहीं रहता कि वे मेरे निर्देशों पर अवश्य चलें। यदि वे फिर भी भूल करते हैं तो मैं दुखी नहीं होता। यदि वे पुनः मेरे पास आते हैं तो भी मैं क्रोधित नहीं होता बल्कि अपनी सलाह देकर उन्हें बिदा करता हूँ। वृद्ध कि बात सुनकर सुकरात बहुत प्रसन्न हुए और बोले "इस आयु में जीवन कैसे जिया जाये, यह आपने बहुत अच्छी तरह से समझ लिया है।"

मामचन्द रिवाड़िया
आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली
मो. 9212003162

****

डी.ए.वी. भड़ोली (नादौन) में हिन्दी दिवस सम्पन्न

डी.ए.वी. भड़ोली (नादौन) हि.प्र में हिन्दी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ किया गया। इस समारोह में विद्यालय के 170 छात्र–छात्राओं ने बढ़ चढ़कर उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण समूहगान, नृत्य, भाषण नाटिका, लघुनाटिका, कविता इत्यादि रहे। नन्हें मुन्हें बच्चों द्वारा 'हिन्दी है देवो की भाषा तेरी मेरी ये अभिलाषा' समूह गान प्रस्तुत करके सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रधानाचार्य आर.एस.राणा मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए। कक्षा नौवीं आठवीं के विद्यार्थियों द्वारा हास्य लघु नाटिका पेश की गई। वहीं कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों द्वारा 'सत्यमेव जयते' मधुर गीत प्रस्तुत कर सबको आनंद विभोर कर दिया। प्रधानाचार्य आर.एस. राणा ने बच्चों की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली चौथी भाषा है। हिन्दी हमारे राष्ट्र की प्रतीक है जो पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखती है। अन्त में प्रधानाचार्य ने अध्यापकों व बच्चों को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

आर्य गर्ल्ज़ स्कूल कादियाँ में वैदिक यज्ञ

वेद कौर आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंण्डरी स्कूल कादियाँ जिला गुरुदासपुर (पंजाब) के प्रांगण में वैदिक सप्ताह के सन्दर्भ में यज्ञ किया गया। प्राचार्या ने यज्ञ का महत्त्व बतलाते हुए यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर स्कूल की छात्राओं कुमारी प्रियंका तथा किरणजोत ने यज्ञ का महत्त्व बताते हुए अपने विचार रखे। कुमारी संजना और हरसिमरन ने अपनी कविता द्वारा छात्राओं को मंत्रमुग्ध किया। छात्राओं को पारितोषिक भी दिए गये। पश्चात् शांतिपाठ वैदिक यज्ञ की समाप्ति की गई।

सोलन लाल डी.ए.वी. अम्बाला में मनाया गया हिन्दी दिवस

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर द्वारा हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला के सहयोग से हिन्दी दिवस के अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। छात्र अध्यापकों ने "मेरी भाषा मेरा गौरव", "समूचे विश्व में पैर पसारती हिन्दी" और "हिन्दी भाषा दमकती आशा" नामक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस प्रतियोगिता में सभी छात्रों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और हिन्दी की महिमा का गुणगान किया। भाषण प्रतियोगिता में अमिता ने प्रथम, पूजा और लव कुमार ने द्वितीय और निशा ने तृतीय स्थान प्राप्त

किया। रवीन कुमार बी.एड. प्रथम वर्ष को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. नीलम लूथरा ने भी स्वरचित कविता प्रस्तुत करके हिन्दी के प्रति आभार प्रस्तुत किया। डॉ नरेन्द्र कौशिक ने हिन्दी भाषा को अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने का संदेश दिया। डॉ. सुषमा गुप्ता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए छात्रों को हिन्दी भाषा के महत्त्व से अवगत कराया। डॉ. नीलम लूथरा और प्रो रश्मि ने हिन्दी दिवस पर निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक भी उपस्थित रहे। डॉ. नीलम लूथरा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय गान के साथ इस कार्यक्रम का समापन किया गया।

खलासी लाइन सहारनपुर में 65वाँ वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में 65वें वेद प्रचार सप्ताह के रात्रिकालीन अंतिम सत्र में समापन दिवस पर विश्वस्तरीय वैदिक विद्वान सन्यासी यज्ञमुनि जी का प्रवचन हुआ। मुम्बई से पधारे वैदिक भजनोपदेशक विरेन्द्र मिश्रा ने भजन प्रस्तुत किए। स्वामी यज्ञमुनि जी ने कहा अगर हम भौतिक पदार्थो के चक्कर में ही पड़े रहेंगे तो वेद कहता है कि पेड के पत्ते के समान गिर जाना है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नवादा से पधारे चौधरी रणधीर सिंह जी ने की। मंच संचालन डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री एवं डॉ. राजवीर सिंह वर्मा ने किया। डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री ने आए हुए सभी श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया और आभार व्यक्त किया। सभी दानी महानुभावों का आभार व्यक्त किया तथा सभी का जिन्होंने भी वेद प्रचार सप्ताह में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज खलासी लाईन को सहयोग दिया उनका आभार व्यक्त किया और आशा प्रकट की कि भविष्य में भी इसी प्रकार विद्वानों व सन्यासियों का सहयोग मिलता रहेगा। नगर निगम मेयर श्री संजीव वालिया ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की सराहना की। तत्पश्चात् शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 03/04-10-2018

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर के प्रागंण में कॉलेज प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन के उत्साहवर्धक एवं योग्यात्मक नेतृत्व अधीन 'वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह' का भव्य आयोजन किया गया। समारोह को अंलकृत करने हेतु मुख्यातिथि स्वरूप माननीय प्रो. गणेशी लाल (राज्यपाल, उड़ीसा) उपस्थित रहे। मुख्यवक्ता श्री एम.एल. सेखड़ी (उपाध्यक्ष, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली) एवं जस्टिस (रिटायर्ड) श्री एन.के. सूद (उपाध्यक्ष डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति व चेयरमैन स्थानीय समिति), श्री अरविन्द घई, (सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली) विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्राचार्या एवं गणमान्य अतिथियों द्वारा ज्ञानदीप प्रज्ज्वलित कर मंगलकामना की गई और डी.ए.वी. गान प्रस्तुत किया गया।

मुख्यातिथि प्रो. गणेशी लाल जी ने छात्राओं को अपना शुभ आशीष देते हुए बेटियों को महान् देश की महान बेटियाँ कहकर सम्बोधित किया। स्त्रियों के प्रति सम्मान भाव व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा स्त्री महाशक्ति है, अपराजित, भावुक, करुणावती, अद्वितीय व अद्वैत है। उन्होंने छात्राओं को प्रेरित किया कि वर्तमान को महत्त्व दें क्योंकि आप कल का नहीं आज का भविष्य हैं।

प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने पुरस्कृत छात्राओं को बधाई दी एवं संस्था की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने छात्राओं को निरन्तर प्रयासरत रहने की प्रेरणा दी। जसिटस एन.के. सूद ने कहा कि अध्यापक हमारी संस्कृति में उच्चतम स्थान रखते हैं। उन्होंने छात्राओं को अपने गुरुजनों का आदर व सम्मान करने के साथ ज्ञान की ज्योति को सदैव प्रज्ज्वलित करने हेतु प्रेरित किया। श्री एम.एल. सेखड़ी ने पुरस्कृत छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि नेता वही बनता है जो लक्ष्य को जानता है व उसकी तरफ अग्रसर होता है। उन्होंने छात्राओं को विश्व के सिर का ताज बनने एवं संसार में अपनी मिसाल बनाने हेतु शुभ आशीष दिया।

इस अवसर पर कुल 188 छात्राओं को पुरस्कृत किया गया जिसमें से 63 स्वर्ण पदक, 26 रजत पदक एवं 23 कांस्य पदक वितरित किए गए। समारोह को आनन्दवर्धक बनाने हेतु लोक गीत, डांस, कोरियोग्राफी पेश की गई। अन्त में श्री अरविन्द घई ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते पुरस्कृत छात्राओं को बधाई दी एवं कहा कि आपने स्वामी दयानन्द जी के स्वप्न को साकार किया है। उन्होंने प्राचार्य, टीचिंग व नॉन टीचिंग स्टाफ को भी बधाई दी।

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालन्धर में लगाए एक हजार पौधे

''जिस रफतार से पौधों को काटा जा रहा है, वो दिन दूर नहीं जब हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन फयूल पंप से खरीदना पड़ेगा। युवा पीढ़ियों को पौधों की अहमियत समझते हुए वृक्षारोपण में बढ़चढ़ कर भाग लेना चाहिए। नहीं तो आने वाली पीढ़ियों को इसका दुष्परिणाम सहना पड़ेगा।'' यह विचार डी.ए.वी. विश्वविद्यालय में उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन ने विद्यार्थियों से वृक्षा रोपण के मौके पर प्रकट किए। उन्होंने कहा कि सरकार अपने स्तर पर वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चला रही है, लेकिन पौधे से ही मानव जीवन का अस्तित्व है इसलिए हमें पौधे को बचाने की पहल खुद करनी चाहिए।

एनएसएस यूनिट, 'कदंब द बॉटनी क्लब' और 'गो ग्रीन क्लब' के सदस्य विद्यार्थियों ने लगभग एक हजार वृक्षों का रोपण करते हुए पर्यावरण बचाने का संकल्प लिया। डॉ. सुषमा आर्या, कुल. सचिव, डॉ. देशबंधु गुप्ता डीन और डॉ. जसबीर ने भी पौधारोपण कर विद्यार्थियों को प्रेरित किया। डॉ. आर्या ने कहा कि आज पूरा विश्व प्रदूषण की समस्याओं से जूझ रहा है। विकसित राष्ट्र तेजी से पिघलते ग्लेश्यिरों पर चिंता जता रहे हैं, पिछले 50 सालों में कई जीवों का अस्तित्व पृथ्वी से लगभग खत्म हो गया है। इसका सबसे बड़ा कारण पर्यावरण का असंतुलित होना है, इसीलिए प्रत्येक मानव की ज़िम्मेवारी बनती है कि वो अधिक से अधिक पौधे लगाते हुए उसे विकसित करने में अपना योगदान दे। वृक्षारोपण डॉ. गीतांजलि, डॉ. स्मृति और डॉ. राजबाल के मार्गदर्शन में हुआ।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल को मिला स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल को पंजाब भर के प्राइवेट स्कूलों में सर्वोत्तम स्वच्छ विद्यालय का पुरस्कार मिला। शिक्षक दिवस के अवसर पर जालंधर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में प्रिंसीपल डॉ. अंजना गुप्ता को 'स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार' पाने का गौरव प्राप्त हुआ। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय अभियान के अंतर्गत यह पुरस्कार उन्हें पंजाब राज्य के शिक्षा मंत्री श्री ओम प्रकाश सोनी और शिक्षा सचिव श्री कृष्ण कुमार द्वारा दिया गया। इस अवसर पर डी.जी.एस.ई. श्री प्रशांत कुमार गोयल और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रिंसीपल डॉ. अंजना गुप्ता ने बताया कि स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मानकों पर पूरे उतरने वाले पंजाब राज्य के 15 विद्यालयों का चयन किया गया जिनमें से डी.ए.वी. इंटरनैशनल इकलौता प्राइवेट स्कूल है जिसे यह सम्मान प्राप्त हुआ है। विद्यालय की स्वच्छता एवं पर्यावरण संबंधी नीतियों के कारण ही विद्यालय को यह पुरस्कार मिला है। विद्यालय में वर्षा के पानी के संरक्षण का, हर प्रकार के औषधीय पौधे हरित आवरण की व्यवस्था जैविक खादें की तैयारी हैं, कंप्यूटर के अधिक से अधिक प्रयोग प्लास्टिक के निराकरण को लक्ष्य कर यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

विद्यालय परिवार इस ध्येय को लेकर कार्यरत है कि स्वच्छता में ही स्वास्थ्य है इसलिए प्रत्येक कक्षा, विद्यालय प्रांगण, पीने के पानी और अन्य सभी जगहों पर सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों को वे अपने घर और मुहल्ले की स्वच्छता का भी ध्यान रखने की प्रेरणा दी जाती है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**